समाज विकास

मूल्य : १० रुपये प्रति, वार्षिक : १०० रुपये

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

कौस्तुभ जयंती वर्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
75
ALL INDIA MARWARI FEDERATION
PLATINUM JUBILEE YEAR
1935-2010

▸ जुलाई-अगस्त २०१० ▸ वर्ष ६० ▸ अंक ०७-०८

राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल द्वारा सम्मेलन कौस्तुभ जयंती समारोह के उद्घाटन के लिये स्वीकृति

राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल को सम्मेलन का प्रतीक चिन्ह भेंट करते राष्ट्रीय अध्यक्ष नन्दलाल रुँगटा के साथ हैं सांसद सुदीप बंदोपाध्याय, कौस्तुभ जयंती कमेटी के चेयरमैन सीताराम शर्मा, महामंत्री रामअवतार पोद्दार, कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया, संयुक्त महामंत्री ओमप्रकाश पोद्दार व सन्मार्ग के संपादक विवेक गुप्ता।

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity.
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph : 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

समाज विकास

✦जुलाई–अगस्त २०१० ✦वर्ष ६० ✦अंक ७–८ ✦एक प्रति–१० रु. ✦वार्षिक–१०० रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है	५
किसी का कद ऊँचा है तो किसी का पद – शम्भु चौधरी	६
समाज को सोच बदलनी चाहिये – श्री नन्दलाल रूंगटा	७
जंतर–मंतर : राष्ट्रपति भवन में–राष्ट्रपति के साथ – सीताराम शर्मा	८
उच्च शिक्षा हेतु २ लाख की सहायता	९
संगोष्ठी : ''धार्मिक आयोजन – घटती आस्था, बढ़ता दिखावा''	१०
दुखमय घर संसार – ओम लडिया	१२
मरुसंस्कृति : तथ्यों के निकष पर – डॉ. रामकुमार दाधीच	१४
समीक्षा : खामोशी में चीखती आवाज ''गोपीचन्द भरथरी''	१५
व्यंग्य : पड़ोसी की पीड़ा – रामचरण यादव	१६
नये आजीवन एवं विशिष्ट सदस्यों की सूची	१७
कविता : ऐसी ही होती है माँ – गोविन्दी पोद्दार	१७
मारवाड़ी समाज की धरोहर :	
मारवाड़ी समाज की संस्थाएं	१९–२८
मारवाड़ी अस्पताल 'वाराणसी'	२९
महाराजा अग्रसेन इन्टर कॉलेज, झरिया	२९
श्री माहेश्वरी विद्यालय, कोलकाता	३०
टांटिया हाईस्कूल	३०
मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी	३१
श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल	३२
श्री मारवाड़ी दातव्य औषधालय, गुवाहाटी	३३
गुवाहाटी गोशाला असम का ऐतिहासिक धरोहर	३३
बड़ाबाजार लाइब्रेरी	३५
श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय	३६
बालिका विद्या मन्दिर, झरिया	३७
माहेश्वरी पुस्तकालय	३७
सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय	३७
श्रद्धांजलि :	
श्रद्धा के दो शब्द : राजकुमार गाड़ोदिया	३८
श्री चोखानीजी को पुत्र शोक	३८

स्वत्वाधिकारी :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ✦ १५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता–७००००७

फोन : ०३३–२२६८ ०३१९ ✦ E-mail: samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा

ऐभल प्रिंटर्स प्रा.लि., ४५बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता–७००००९ में मुद्रित

✦संपादक : नंदकिशोर जालान ✦ कार्यकारी संपादक : शंभु चौधरी

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

भंवरमल सिंघी समाज सेवा पुरस्कार

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष एवं समाजसेवी स्वर्गीय भंवरमल सिंघी की स्मृति में गठित भंवरमल सिंघी समाज सेवा न्यास द्वारा समाज सुधार के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए स्थापित भंवरमल सिंघी समाज सेवा पुरस्कार सम्मेलन के 75 वें स्थापना दिवस के अवसर पर प्रदान किया जाएगा।

उक्त पुरस्कार हेतु प्रादेशिक सम्मेलनों, शाखा सभाओं एवं सदस्यों से 2008–2010 कार्यकाल में समाज सेवा कार्य के आधार पर उपयुक्त नाम प्रस्तावित कर केन्द्रीय कार्यालय को 25 सितम्बर 2010 तक भेजने की कृपा करें।

निर्णायक मंडल

श्री सीताराम शर्मा, श्री हरिप्रसाद बुधिया, श्री नन्दलाल रुँगटा, श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, श्री सज्जन भजनका, श्री आत्माराम सोन्थालिया, श्री रामअवतार पोद्दार, श्री पुष्कर लाल केडिया।

संयोजक :– श्री संजय हरलालका

सीताराम रुँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व उपाध्यक्ष एवं बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष स्व0 सीतारामजी रुँगटा की स्मृति में राजस्थानी भाषा की श्रीवृद्धि एवं प्रोत्साहन हेतु राजस्थानी साहित्यकारों को देने के लिए पुरस्कार की स्थापना की गई है।

प्रादेशिक सम्मेलनों, शाखा सभाओं एवं सदस्यों से अनुरोध है कि 2008–2010 में सम्पादित साहित्य कृतियों हेतु पुरस्कार के लिए नाम प्रस्तावित कर केन्द्रीय कार्यालय को 25 सितम्बर 2010 तक भेजने की कृपा करें।

निर्णायक मंडल

श्री सीताराम शर्मा, श्री रतनलाल शाह, श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, श्री नन्दलाल रुँगटा, श्री प्रहलाद राय अग्रवाल, श्री नथमल केड़िया, श्री जुगल किशोर जैथलिया, श्री रामअवतार पोद्दार।

संयोजक :– श्री शम्भु चौधरी

उपरोक्त पुरस्कार सम्मेलन के 75 वें स्थापना दिवस पर दिए जायेंगें।

चिट्ठी आई है :

सम्माननीय श्री शंभु जी चौधरी
सादर नमस्कार।

मिलता है नियमीत रूप से समाज विकास
छपा है उसमें आपकी प्रतिभा का प्रकाश
नये विषय, नई बातें, रोचक प्रसंग
लेकर चलते हैं आप पाठकों को सदा संग
विशेषांकों की श्रृंखला ने ज्ञान दीप जलाया है
समाज को आपने अलोक पथ दिखाया है
समाज विकास ने तय की है नई ऊँचाई
देता हूँ आप सबको शत् शत् बधाई

आपका

दिनेश ललवानी (जैन)
आशु कवि : सह–संपादक
भारत दर्पण, सिलीगुड़ी (प.बंगाल)

कौस्तुभ जयन्ती विशेषांक सम्मेलन अपना 75वां वर्षगांठ आगामी 22 सितम्बर 2010 को कोलकाता में मनाने जा रहा है। इस अवसर पर समाज विकास का एक विशेषांक "कौस्तुभ जयन्ती विशेषांक" निकालने की योजना है। आप सभी से अनुरोध है कि इस विशेषांक हेतु आप सामाजिक विषय पर आधारित लेख, कहानी, कविता इत्यादि 20 अगस्त 2010 तक हमें भेज सकते हैं। – सम्पादक

नोट : धर्म से सम्बंधीत लेख न भेंजे।

श्रद्धांजलि :

श्यामानन्द जालान : एक रंग एक्टिविस्ट थे

२४ मई २०१० को (कोलकाता) हिन्दी रंगमंच के राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त निर्देशक, अभिनेता श्यामानन्द जालान ने आँखें मूँद लीं। असाध्य रोग की चपेट में आ कर महीनों से वे बिस्तर पर थे। कोलकाता का रंगमंच उनकी अनुपस्थिति से खाली हुई जगहों को शायद भर भी पाए पर उनकी कल्पनाशीलता, संगठन–क्षमता, लगन–समर्पण और निर्देशक की स्वाधीनता को शायद ही कभी भुला पाए।

वे अनामिका और पदातिक जैसी नाट्य संस्थाओं और आधार–पुरुष के रूप में तो अविस्मरणीय रहेंगे ही एक अनूठे अनुभवी रंग निर्देशक और सिद्ध अभिनेता के रूप में भी हम सबकी स्मृतियों में किसी अमिट इतिहास की तरह बने रहेंगे।

निजी तौर पर मैं जानता हूँ कि वे मोहन राकेश जैसे प्रतिभाशाली नाटककारों के मित्र थे और राकेश अपनी कच्ची पाण्डुलिपियों को किस प्रकार श्यामानन्द जालान जैसे प्रज्ञावन निर्देशकों के हवाले कर दिया करते थे। बादल सरकार जैसे विरल नाटककार से हिन्दी जगत का परिचय कराने में भी उनकी भूमिका अविस्मरणीय रही है। श्यामानन्द सचमुच अद्‌भुत सूत्रधार थे पुराने और नए अर्थों में एक साथ। वे जातीय रंग परम्परा और उसके परिवर्तनों में निरन्तर रचनात्मक ताल मेल की फ़िक्र में डूबे रहते थे। भारत और पश्चिम की रंग दृष्टि को किसी एक संधि विन्दु पर देखने के आकांक्षी श्यामानन्द जी भारतीय रंग दृष्टि की बुनियादों के कुछ कम कायल नहीं थे।

नाटक और लोक–समाज के विकसित होते और छीजते रिश्तों पर भी उनकी निगाह थी और वे मानते थे कि रचे गए शब्दों पर समाज की मुहर का लगना कितना जरूरी है।

सच तो यह कि वे एक रंग–ऐक्टिविस्ट थे। जिन्दगी भर पेशे से बैरिस्टर भर पेशे से बैरिस्टर होकर भी उन्होंने अपना बहुमूल्य और सर्वोत्तम नाटक और रंग–कर्म को दिया। फरवरी २०१० के वागर्थ का संपादकीय उनके इसी महत्त्वपूर्ण योगदान को लेकर लिखा गया था।

हम उन्हें अपनी विनम्र श्रद्धांजलि प्रस्तुत कर रहे हैं।

– विजय बहादुर सिंह, संपादक
वागर्भ, भारतीय भाषा परिषद
36ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता–17

अपनी बात :

किसी का कद ऊँचा है तो किसी का पद

– शम्भु चौधरी

एक कविता १९९० में लिखी थी जिसकी पहली पंक्ती कुछ इस प्रकार है :–

मानसिक चेतना खो दो, रहना है नंद;
दुनिया रहना चाहती है, मुर्दों के संग।

समाज में कुछ व्यक्ति अपनी अभिव्यक्ति सभाओं में आकर व्यक्त तो कर देना चाहते हैं। साथ–साथ किसी के प्रति भी अपमानजनक शब्दों का प्रयोग करना अपना अधिकार समझते हैं, सभाओं में अपनी महत्वाकांक्षा को व्यक्त करने के लिये **दुर्योधन** की भूमिका को अपना धर्म समझने वाले विचारों को मौन रहकर समर्थन दिया जाना यह सब इसी बात को इंगित करता है। किसी का कद ऊँचा है तो किसी का पद। किसी को इसलिये नहीं बोला जा सकता कि वह संस्था को नुकसान पहुँचा देगा या नुकसान हो जायेगा। कई बार सत्य को हम सार्वजनिक जीवन में सिर्फ इसलिये अभिव्यक्त नहीं कर सकते कि हमें इस बात का खतरा बना रहता हैं कि हमारे या किसी सज्जन व्यक्ति द्वारा दी गई सलाह गलत दिशाओं में बिखर कर हमारे कान से गुजरती हुई मस्तिष्क के अन्दर अपनी जहग बनाकर हमारे कार्य करने की क्षमता पर प्रतिघात करेगी, जबकि सामने वाला इस अवसर को अपने आदान–प्रदान का अवसर मानकर, प्रहार की मुद्रा में दिखाई देने लगता है। जिसे वह अपने विजय का पताका तक मान बैठता है। असंतोष और कुंठित व्यक्ति में ऐसे लक्षण आम बात है, साथ ही मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्तियों के भीतर कई बार व्यक्तिगत लोभ की भावना कार्य करती है, जिसे हम स्वार्थी भी कह सकते हैं जो सार्वजनिक जीवन को अपने प्रचार, व्यापार का लाभ या अपनी आय का माध्यम तक बना डालता है। आज समाज के अन्दर इस तरह के तत्त्व ज्यादा सक्रिय नजर आने लगे हैं जो खुद तो बीमार हैं ही, अपनी हरकतों से समाज को भी अस्वस्थ करने में लग जाते हैं।

ऐसे लोगों की इज्जत इतनी बड़ी होती है कि हर छोटी सी छोटी बात पर चली जाती है। इनकी नजर में दूसरे कार्यकर्ताओं की इज्जत या तो होती ही नहीं, यदि होती भी होगी तो ऐसे लोग मानते हैं कि इनकी इज्जत जितनी भी उतार ली जाय **द्रौपदी का चिर** है। समाज के अधिकांशत: लोग बेवजह किसी भी विवाद में पड़ना नहीं चाहते, इसी बात का लाभ इन्हें मिलता रहता है। साथ ही कई बार सही व्यक्ति भी इस विवाद का शिकार बन जाता है, जिसका भरपूर लाभ चन्द लोगों का समूह लेने में नहीं चूकता, वास्तव में एक बार कोई व्यक्ति किसी भी रूप से विवादित हो जाए तो उसके द्वारा दी गई सही सलाह भी विवादित लगने लगती है। हमें देखना चाहिये कि वास्तव में किसी के मन में समाज सेवा की भावना कार्य कर रही हो तो उनकी बातों की गम्भीरता कितनी है, और है भी कि नहीं? यदि नहीं तो भी उसके कद का मजाक न बनाकर बात के पहलुओं पर विचार करने का आश्वासन दिया जा सकता है। आमतौर पर अधिकारी अपने अधिकार का प्रयोग करने लगते हैं जो सामाजिक कार्यकर्ताओं को कई बार ठेस का कारण बनकर विवाद को जन्म दे देती है। ऐसे विवादों के कारण ही कई बार संस्था के नियमावली तक को भी नई व्याख्या के बीच से गुजरना पड़ता है। जो किसी भी संस्था के स्वस्थ्य पर विपरित प्रभाव डालने में सक्षम है।◆

आमतौर पर अधिकारी अपने अधिकार का प्रयोग करने लगते हैं जो सामाजिक कार्यकर्ताओं को कई बार ठेस का कारण बनकर विवाद को जन्म दे देती है। ऐसे विवादों के कारण ही कई बार संस्था के नियमावली तक को भी नई व्याख्या के बीच से गुजरना पड़ता है। जो किसी भी संस्था के स्वस्थ्य पर विपरित प्रभाव डालने में सक्षम है।

अध्यक्षीय :

समाज को सोच बदलनी चाहिये

श्री नन्दलाल रूंगटा, राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

मारवाड़ी समाज मेँ चिन्तन की कमी हमेशा झलकती रहती है। इस कमी को शून्यता तो नहीं कह सकते, हां! संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। समाज का एकतरफा विकास कभी भी किसी भी समाज को सम्मान नहीं दिला सकता। शायद यही कारण है कि समाज के अधिकतर लोगों में पैसे देकर सम्मान पाने की चाहत बनी रहती है।

एक समय था जब समाज में चिन्तन की शुरुआत हुई थी। स्व. श्री भागीरथ कानोड़िया, स्व. भंवरमल सिंघी व स्व. श्री सीताराम सेकसरिया जैसे समाज के मनीषियों के द्वारा स्थापित अनामिका जैसी नाट्य संस्था, भारतीय भाषा परिषद, व्यायामशाला, पुस्तकालय आदि जैसी अनेक संस्थाओं का जन्म सिर्फ समाज की इस शून्यता की एकप्रकार से भरपाई करने का प्रयासभर था। परन्तु मारवाड़ी समाज आज भी २१वीं सदी की तरफ कदम नहीं रख पा रहा है जबकी समाज के कई मनीषियों ने समाज को नई दिशा देने का भरपूर प्रयास किया और यह प्रयास आज भी जारी है। समाज के अन्दर उभरती प्रतिभाएँ हमारे सामने नित्य नये आँकड़े प्रस्तुत कर रही हैं।

पिछले दिनों सम्मेलन की तरफ से दो छात्रों को उच्च शिक्षा समिति द्वारा छात्रवृत्ति प्रदान की गई जिसमें से एक छात्र विमान उड़ान की शिक्षा प्राप्त कर रहा है। उसने हमें बताया कि अब तक वह २४ घँटे की स्वतंत्र उड़ान भर चुका है। यह सुनकर ही समाज रोमांचित हो उठा। समाज के युवक–युवतियाँ तेजी के साथ अपने पारम्पारिक व्यवसाय से अलग हटकर एकतरफ उच्चशिक्षा के हर क्षेत्रों में अपना कौशल स्थापित करते जा रहे हैं, साथ ही हमें इस ओर भी ध्यान देने की जरुरत है कि समाज, कला, विज्ञान, साहित्य, नाट्य विद्या, रंगमंच, नृत्य–संगीत, चित्रकारी, खेलकूद, राजनीति, सामाजिक कार्यों आदि जैसे विभिन्न विद्याओं या अन्य कार्यों में रुचि लेने वाले समाज के युवाओं का भी भरपूर पोषन करे।

समाज की ऐसी कई प्रतिभाएँ सामाजिक संरक्षण के अथवा धन के अभाव में अपनी आजीविका सही रूप से चलाने में सक्षम नहीं हो पाती, साथ ही उनके आत्मसम्मान का भी प्रश्न उनसे जुड़ा रहता है। हमें इन परिस्थितियों को समझने का प्रयास करना होगा। जो चित्रकार रंग की दुनिया में अपना घर बसाता है अथवा जो साहित्यकार अक्षरों की दुनिया में अपना घर बसाते हैं उसका संसार कैसे चलेगा? यह एक अहम् प्रश्न हमारे सामने है। हम चाहते हैं कि समाज का उद्योग जगत इनके जीविका को संरक्षण प्रदान करने में सक्षम भूमिका का निर्वाह कर सकता है।

जब समाज एक दिन के समारोह में लाखों रुपये को पानी में बहा देता है, इससे मिथ्या आत्मसंतुष्टी भले ही हमें मिलती हो, यदि इस आत्मसंतुष्टी के साथ एक–दो ऐसी प्रतिभाओं को अपने–अपने प्रतिष्ठानों मे योग्य पद देकर उनका पोषण किया जाय तो यह समाज के लिये न सिर्फ अनुकरणीय उदाहरण बनेगा, साथ ही हमारा समाज भी गर्व से कह सकेगा कि अब यह समाज सिर्फ व्यवसायी न रह कर, विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अग्रणी भूमिका निभा रहा है। हमें सिर्फ अपनी सोच बदलनी होगी कि आयोग्य व्यक्ति के बगल में खड़े होकर खुद को सम्मानित समझने की जहग समाज के योग्य व्यक्तियों को बगल में बैठाकर समाज को सम्मानित करने की योजना को मूर्तरूप प्रदान करना होगा।◆

जंतर–मंतर :

राष्ट्रपति भवन में–राष्ट्रपति के साथ

सीताराम शर्मा, अध्यक्ष, कौस्तुभ जयंती
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

गत ७ जुलाई को १२ बजकर ४० मिनट पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के एक प्रतिनिधि मण्डल ने भारत की राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल से राष्ट्रपति भवन, दिल्ली में मुलाकात की। विषय था, सम्मेलन के कौस्तुभ जयंती समारोह के उद्घाटन हेतु राष्ट्रपति जी को निमंत्रित करना। यह हम सभी के लिये बड़े गौरव, हर्ष एवं सम्मान का विषय है कि राष्ट्रपति जी ने आगामी २२ सितम्बर २०१० को कोलकाता में आयोजित समारोह में उपस्थिति के लिये स्वीकृति प्रदान कर हमें अनुगृहीत किया है। हम सभी आँख बिछाए उनके स्वागत एवं अभिनन्दन के लिये उत्सुक एवं तत्पर हैं। आप सभी को निमंत्रण है।

प्रतिनिधि मण्डल में उत्तर कोलकाता जहाँ मारवाड़ी सम्मेलन का केन्द्रीय कार्यालय स्थित है एवं पश्चिम बंगाल के जिस निर्वाचन क्षेत्र में संभवत सबसे अधिक प्रवासी राजस्थानी एवं हरियाणवी बसते हैं, के लोकप्रिय सांसद श्री सुदीप बंदोपाध्याय का साथ, सहयोग एवं समर्थन अति महत्वपूर्ण था।

७ सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल में सांसद के अतिरिक्त शामिल थे सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा, महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, सयुंक्त मंत्री श्री ओमप्रकाश पोद्दार, कोलकाता के सबसे अधिक लोकप्रिय दैनिक सन्मार्ग के संचालक श्री विवेक गुप्ता एवं आपका यह लेखक।

कौस्तुभ जयंती समारोह समिति के अध्यक्ष की हैसियत से मुझे प्रतिनिधिमण्डल की ओर से मुख्य रुप से बात रखने का भार एंव सम्मान दिया गया। सम्मेलन का श्रीमती प्रतिभा पाटिल से भेंट करने का यह चौथा अवसर था। मैंने इसकी याद दिलाते हुए कहा कि पहली बार मैं सम्मेलन के महामंत्री के रुप में जयपुर में मिला जब वे राजस्थान की राज्यपाल थी, कुछ महीनों बाद जब वे कोलकाता पधारी तो सम्मेलन ने उनके स्वागत में सम्मेलन के तत्कालीन कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया के निवास स्थान पर श्री मोहनलाल तुलस्यान की अध्यक्षता में भव्य स्वागत का आयोजन किया। राष्ट्रपति के रुप में प्रथम कोलकाता यात्रा के दौरान सम्मेलन के एक प्रतिनिधिमण्डल ने सम्मेलन के अध्यक्ष के रुप मे मेरे नेतृत्व में महामहिम श्रीमती पाटिल से भेंट की। इस मुलाकात में साथ थे–श्री नन्दलाल रुंगटा, श्री हरिप्रसाद बुधिया, श्री प्रह्लादराय अग्रवाल, रामअवतार पोद्दार, श्री हरिप्रसाद कानोड़िया एवं श्री रवि लडिया। समाज विकास की प्रतियां जिनमें इन अवसरों के चित्र प्रकाशित हुए थे, राष्ट्रपति जी को भेंट किये गये।

राष्ट्रपति भवन की भव्यता में खोये सम्मेलन सभापति श्री रुंगटा ने अपने आप से बात करते हुए यूं ही सहजता से कहा–मैं पहली बार राष्ट्रपति भवन आया हूँ।

राष्ट्रपति जी से मुलाकात के पहले आतिथ्य–कक्ष में हमें २०–२५ मिनट इन्तजार करना पड़ा था। मैं सोच रहा था कि मैं पहली बार कब राष्ट्रपति भवन आया था एवं किन–किन महामहिमों से मुझे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

यदि मेरी यादाश्त सही है तो पहली बार सत्तर के दशक में राष्ट्रपति वी० वी० गिरि से साक्षात्कार के लिये राष्ट्रपति भवन देखने का अवसर प्राप्त हुआ था। उसके बाद ज्ञानी जैल सिंह से दो बार, के० आर० नारायण साहब से एक बार, डॉ. शंकर दयाल शर्मा ने मेरी पुस्तक युनाइटेड नेशंस–१०० पापुलर क्वेश्चन एण्ड एन्सरर्स का १९९५ में राष्ट्रपति भवन में विमोचन किया था। इस अवसर पर सम्मेलन के तत्कालीन सभापति श्री नन्दकिशोर जालान भी कोलकाता से साथ पधारे थे। सम्मेलन की हीरक जयंती में राष्ट्रपति डॉ. शर्मा पधारे इसकी कवायद इसी कार्यक्रम से आरम्भ हुई थी। इसके बाद राष्ट्रपति डा० कलाम से दो बार मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। एक अवसर पर सम्मेलन के तत्कालीन कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया भी साथ थे।

२००२ में बेलारुस गणराज्य के कोलकाता में मानद कन्सुल जनरल के रुप में मेरी नियुक्ति के बाद दो बार भारत के राष्ट्रपति द्वारा बेलारुस गणराज्य के राष्ट्रपति के सम्मान में राष्ट्रपति भवन में आयोजित राजकीय भोज में शामिल होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। पुरानी यादों को तोड़ते हुए ए० डी० सी० ने घोषणा की कि राष्ट्रपति जी ने बुला भेजा है।◆

उच्च शिक्षा हेतु 2 लाख की सहायता

उच्च शिक्षा समिति के चेयरमैन श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल 2 लाख का ड्राफ्ट देते हुए।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने ''**दी कोलकाता ट्रामवेज कंपनी हॉल**'' में १० जुलाई को गोष्ठी के दौरान देश के शीर्ष संस्थान इंदिरा गांधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी, रायबरेली में पायलट की ट्रेनिंग ले रहे मेधावी छात्र श्री नवीन कुमार धारीवाल को २ लाख रुपये की सहायता दी। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा, पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका की उपस्थिति में उच्च शिक्षा समिति के चेयरमैन श्री प्रहलाद राय अग्रवाल ने उन्हें २ लाख का ड्राफ्ट सौंपा। श्री नवीन कुमार धारीवाल कोलकाता के बेहला निवासी हैं।

इस अवसर पर श्री अग्रवाल ने कहा कि उच्च शिक्षा समिति की मेधावी छात्रों को आर्थिक सहायता देने का निर्णय सही है। उन्होंने कहा कि जानकारी के अभाव में इस बावत हमारे पास कम आवेदन आ रहे हैं, अत: समिति के इस पहल को अभी और प्रचार की जरूरत है। धन के अभाव में उच्च शिक्षा से वंचित रह जाने वाले मेधावी छात्रों के बारे में उन्होंने कहा कि समिति से वैसे छात्रों को हरसंभव मदद मिलेगी।

सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा ने श्री धारीवाल को समाज का गौरव करार देते हुए कहा कि प्रशिक्षण के बाद श्री धारीवाल एक सफल पायलट होकर समाज सहित देश का नाम रोशन करेंगे।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने कहा कि पायलट की ट्रेनिंग हेतु श्री धारीवाल का चयन चार हजार छात्रों में किया गया। इस प्रशिक्षण के लिए उन्हें २५ लाख ८० हजार रुपये की जरूरत थी। बैंक व अन्य स्रोत से उक्त राशि की व्यवस्था करने के बाद भी दो लाख रुपय उन्हें कम पड़ रहे थे जिसके लिए उन्होंने आवेदन दिया था। सम्मेलन से छात्रों को मिलनेवाली आर्थिक सहायता के बारे में श्री पोद्दार ने कहा कि समाज के जो मेधावी छात्र आर्थिक अभाव के कारण नहीं पढ़ पाते वैसे छात्रों को सहयोग देने हेतु सम्मेलन सदैव तत्पर है।

लाभार्थी छात्र श्री नवीन कुमार धारीवाल ने २ लाख रुपये सहयोग देने के लिए सम्मेलन की भूरि – भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि वह सम्मेलन के इस सहयोग को कभी नहीं भूलेंगे तथा प्रशिक्षण के बाद नौकरी मिलने पर इस राशि में कुछ और राशि जोड़कर सम्मान के साथ सम्मेलन को वापस कर देंगे ताकि इस राशि से समाज के और भी मेधावी छात्र उच्च शिक्षा ग्रहण कर सके।◆

संगोष्ठी :

धार्मिक आयोजन

घटती आस्था, बढ़ता दिखावा

बायें से सीताराम अग्रवाल, सीताराम शर्मा, प्रह्लाद राय अग्रवाल, रा. अध्यक्ष नन्दलाल रुँगटा, रामअवतार पोद्दार, आत्माराम सोंथलिया, गीतेश शर्मा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने दी कोलकाता ट्रामवेज कंपनी, लिमिटेड हॉल आर. एन मुखर्जी रोड, ४ तल्ला कोलकाता–१ में १० जुलाई २०१० को धार्मिक आयोजन–घटती आस्था, बढ़ता दिखावा विषय पर संगोष्ठी आयोजित की। संगोष्ठी की अध्यक्षता श्री नन्दलाल रुँगटा ने की एवं विषय प्रवर्तन सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने किया। गोष्ठी के मुख्य वक्ता श्री सीताराम शर्मा और श्री गीतेश शर्मा थे। सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया , उच्च शिक्षा समिति के चेरमैन श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल भी गोष्ठी में मौजूद थे।

सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा ने कहा कि हमारा समाज धर्मभीरू समाज होने के कारण धर्म को प्रधानता देता है। सभापति ने कहा कि सार्वजनिक धन से धार्मिक आयोजन करना सरासर अनुचित है। उन्होंने कहा कि आडंबर रहित धार्मिक आयोजन जरूर हो किंतु उसमें दिखावा व प्रदर्शन न हो।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने स्वागत वक्तव्य दिया और गोष्ठी के उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

गोष्ठी के विषय को सामयिक करार देते हुए उच्च शिक्षा समिति के चेयरमैन श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल ने कहा कि समाज के नेतृत्वकर्त्ता धनवानों के पास जाएं और उनलोगों को बढ़िया काम करने की नसीहत दें ताकि समाज में सुधार हो सके। उन्होंने कहा कि समाज के ऊपरी तबके में सुधार होने से नीचे स्वत: ही सुधार हो जाएगा।

विषय प्रवर्तन करते हुए पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि समाज जो सोचता है उसपर चिंतन भी जरूरी है और उसके लिए कई महीनों से हमलोग गोष्ठियां करते आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि सम्मेलन को जहां खामियां नजर आती है वहां समाज से विमर्श करना चाहता है तथा उसी कड़ी में समाज के ज्वलन्त विषयों पर खुली चर्चा गोष्ठियों के माध्यम कई महीनों से हो रही है, सम्मेलन जबरन समाज पर अपनी बात नहीं थोपना चाहता। धर्म को संवेदनशील विषय करार देते हुए उन्होंने कहा कि सम्मेलन समाज के धार्मिक आस्था के खिलाफ नहीं है किंतु दिखावा के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि धर्म के नाम पर अकूत संपदा बटोरे जा रहे हैं किंतु गरीब छात्रों की पढ़ाई और बीमार व्यक्ति के इलाज के लिए कोई फूटी कौड़ी नहीं देना चाहता। श्री शर्मा ने कहा कि जानलेवा प्रतिस्पर्धा, अनिश्चित भविष्य, असुरक्षा की भावना के वजह से व्यक्ति धर्म में सुरक्षा खोज रहा है।

वक्ता श्री सीताराम अग्रवाल ने कहा कि जब आस्था घटती है तब दिखावा बढ़ता है। महानगर में चल रहे धार्मिक प्रवचनों के मद्देजनर उन्होंने कहा कि चमकते पंडाल में प्रवचन करना महज दिखावा है आस्था नहीं। श्री अग्रवाल ने कहा कि जहां बड़े लोगों की पूंजी धन है वहीं आम आदमी की पूंजी आस्था है। उन्होंने कहा कि ईश्वर के प्रति आस्था आज भी गांव देहात में बची है किंतु शहर में वह दिखावे में परिवर्तित हो गई है। गंगासागर और कुंभ में डुबकी लगाने हमलोग आस्था के कारण ही जाते हैं। उन्होंने कहा कि आज कल प्रवचन आयोजित करवाने हेतु इवेन्ट कंपनियों को ठेके दिये जाते हैं, यह दिखावा नहीं तो और क्या है? श्री अग्रवाल ने कहा कि

सीताराम अग्रवाल को प्रतीक चिन्ह देते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष नन्दलाल रुँगटा

आज शिक्षा का विस्तार हुआ है अतरू धर्म के वैज्ञानिक पक्षों पर चर्चा होनी चाहिए। धार्मिक आयोजन में भारी राशि के खर्च का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि जो राशि कीर्त्तन के नाम पर खर्च किए जाते हैं उसका १५ प्रतिशत भाग भी यदि समाज हित में लगा दें तो इससे समाज का भला होगा। श्री अग्रवाल ने कहा कि हमलोग शुद्ध भावना से काम करें तब धर्म में आस्था ज्यादा और दिखावा कम रहेगा।

वक्ता श्री गीतेश शर्मा ने हिन्दू धर्म में मूर्ति पूजा की उत्पत्ति की ऐतिहासिक व्याख्या करते हुए कहा कि बौद्ध धर्म के प्रभाव के कारण हिन्दू धर्म में मूर्ति पूजा की शुरुआत हुई। उन्होंने कहा कि प्राचीन काल में कथा–प्रवचन का विधान नहीं था। धर्म की सही व्याख्या किये जाने की बात उन्होंने गोष्ठी में रखी। श्री शर्मा ने कहा कि पहले ग्रंथ को पढ़िये फिर निर्णय लीजिये की वह पूजनीय है या नहीं। धार्मिक आयोजन में जो दिखावे की प्रवृत्ति बढ़ी है उसके लिए श्री शर्मा ने कहा कि हमारा समाज ही मुख्य रूप से दोषी हैं। उन्होंने कहा कि एक अनुमान के हिसाब से कोलकाता महानगर में हर साल धर्म के नाम पर ५०० से ७०० करोड़ रुपये खर्च होते हैं। श्री शर्मा ने कहा कि क्रूज पर जो भागवत कथा होती है उसमें महज दिखावा है आस्था नहीं। उन्होंने सतियों की चर्चा करते हुए कहा कि एक समय सिर्फ राणी सती हुआ करती थी किंतु आज हमारे समाज में कई सतियां हो गई है। उन्होंने कहा कि ऐसा समाज में डर और असुरक्षा की भावना के कारण हो रहा है।

गोष्ठी में श्री नन्दलाल सिंघानियां ने कहा कि गोष्ठी का विषय धार्मिक आयोजन–घटती आस्था, बढ़ता दिखावा है जो गलत है। उन्होंने कहा कि मेरे हिसाब से विषय होना चाहिए था धार्मिक आयोजन बढ़ती आस्था, घटता दिखावा। श्री सिंघानियां ने कहा कि आस्था से ही धर्म बचा है और आस्था के कारण गरीब अमीर सभी तीर्थस्थल जाते हैं। उन्होंने कहा कि तड़क– भड़क से जो धार्मिक आयोजन हो रहे हैं वह आस्था ही है दिखावा नहीं।

श्री गोविन्द शर्मा ने कहा कि परोपकार ही धर्म है। मुसीबत में पड़े इंसान की मदद करना धर्म ही है।

श्री ओम लडिया ने कहा कि मानवता ही धर्म है। हमलोग धर्म के नाम पर गुमराह हो गए हैं।

वक्ता श्री सीताराम अग्रवाल को श्री नन्दलाल रुँगटा ने

गीतेश शर्मा को प्रतीक चिन्ह देते हुए कौस्तुभ जयंती के अध्यक्ष सीताराम शर्मा

तथा श्री गीतेश शर्मा को श्री सीताराम शर्मा ने सम्मेलन का प्रतीक चिन्ह भेंट किया।

श्री आत्माराम सोंथलिया ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए दोनों वक्ताओं, गोष्ठी के संयोजक श्री कैलाशपति तोदी सहित श्रोताओं को धन्यवाद दिया।

गोष्ठी का संचालन श्री संजय हरलालका ने किया।

दुखमय घर संसार

(एक विफल चर्चा)

– ओम लडिया

आजकल जहाँ कहीं भी लोग मिलते हैं तो मुख्य चर्चा का विषय होता है **''टूटते हुए परिवार''**। सभी के चेहरे पर एक उदासी व हताशा झलकती है। सभी टूटते परिवार को लेकर चिंता तो करते हैं पर (निदान का) चिन्तन नहीं करते हैं। कारण की तह में जाना ही नहीं चाहते हैं, और यही समझते हैं कि आज के सामाजिक परिवेश में यह विधि का विधान है एवं इसका निदान संभव नहीं है। क्या संयुक्त परिवार वास्तव में अतीत का इतिहास होकर रह गया है।

इस छोटे से आलेख में, मैंने विभिन्न चर्चा के अधार पर एवं तटस्थ होकर उपरोक्त पहलुओं पर प्रकाश डालने की चेष्टा की है।

भला जो खोजन मैं चला, भला न मिलिया कोई।
जो दिल झाँका आपना, मुझसे भला न कोई।।

जी हाँ प्रत्येक घर परिवार में कोई एक ऐसा होता है जो अहंकारवश स्वयं को सदा उचित ही मानता है। अन्य सदस्यों की परवाह न करते हुए छोटी–छोटी बातों में दोष निकालता है, हर काम में मीनमेख खोजता है। इस प्रकार का व्यक्ति ताना–बाना, लांछन, कुटिलता में दक्ष होता है। इनके कुप्रभाव से परिवार में अशान्ति, कलह, झगड़ा घर कर लेती है। इस प्रकार के स्त्री या पुरुष की तुलना मंथरा से की जा सकती है, जिसने रघुकुल को ही नहीं अपितु समस्त अयोध्या राज्य को हिला दिया। **यह घर–घर की कहानी है।**

विवाहिता पुत्री : अपने विवाहिता पुत्री के ससुराल संबंधी समस्याओं–परिस्थिति को उसे स्वयं ही हल करने दें, उसमें किसी भी तरह का हस्तक्षेप न करें। माताएँ मोहवश यह गलती करती हैं जो उसके जीवन में विष घोलने के समान है। कभी–कभी विकटतम, असाध्य परिस्थितियों में निराश होकर वह सोचने लगती है कि **जायें तो जायें कहाँ?** मजबूरन घर से पलायन या आत्महत्या ही विकल्प रह जाता है। माता–पिता का कर्तव्य है कि ऐसी आशंका होने पर अपनी पुत्री को आश्वस्त करें कि उनके घर का दरवाजा उसके लिये खुला रहेगा।

सास भी कभी बहू थी : हर माँ का अरमान होता है कि उसका पुत्र सुयोग्य युवक बने, एक सुन्दर, सुशिक्षित बहू घर में आये और साथ में लाये बहुत सा दहेज। नई नवेली बहू शुरु–शुरु में तो (दासी स्वरुपा) घर में सबके लाड़ प्यार की गुड़िया बनती है और सास भी तहे दिल से बहू को चावपूर्वक रखती है। किन्तु यह स्थिति अल्पकालीन होती है। यदि ऐसा माहौल साल–दो साल तक चल जाए तो सौभाग्य समझना चाहिए। जहाँ बहू ने विरोध जताना शुरु किया, बात मानने में आनाकानी की, सास का रौद्ररुप सामने आने लगता है। बहू भी कहाँ कम सिद्ध होती है। उसका भी ज्वालामुखी फटने लगता है, और शुरु होती है परम्परागत सास–बहू की तू–तू, मैं–मैं। हर सास के अन्त: मन में बदले की भावना छिपी रहती है और उसके ज़ेहन में घूमता है वो तिरस्कार जनक दुर्व्यवहार जो उसने अपनी सास से झेला था। अब उसकी बारी है और वह भी अपनी बहू के साथ वैसा ही दुर्व्यवहार करती है। यदि परिवार में कुवाँरी ननद है तो और भी बलिहारी है। ऐसे में दयनीय स्थिति होती है, उस युवक की जो पति भी है, पुत्र भी है और भाई भी। कुछ युवक अपनी पत्नि के उकसाने–बहकाने पर परिवार के अन्य सदस्यों से झगड़ते हैं यह सिर्फ उनकी मूढ़ता का परिचायक है। घर की कलह और माँ, बहन और पत्नी के बीच पिस जाता है।

चलती चक्की देखकर, दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में, बाकी बचा न कोय।।

तटस्थ रहकर धैर्यपूर्वक स्थिति को सामान्य बनाने में ही उसकी एवं परिवार की भलाई है। माँ एवं पत्नी दोनों की अहम भूमिका है दोनों का युवक पर अपना–अपना अधिकार है। वे एक दूसरे के पूरक है। यदि हर सास के दिल में यह भावना जागृत हो कि उसकी अपनी विवाहिता पुत्री भी, किसी घर की बहू है। जैसा व्यवहार वह उसकी सास से अपनी पुत्री के निमित अपेक्षा करती है वही व्यवहार अपनी बहू के प्रति दर्शाए। साथ ही साथ बहू भी प्रतिबद्ध होकर हर दिन सास का आशीष लें–चाहे मन–मुटाव कितना ही गहन क्यों न हो, तो शायद समस्याएं काफी अंश तक सहज हो जाएँ। **किन्तु क्या यह संभव है?**

नारी परिवार का मान है मर्यादा है। अपवाद स्वरुप कुछ–कुछ घरों में सास–बहू का नाता माता–पुत्री की तरह देखा गया है–ऐसे परिवार बधाई के पात्र हैं।

सच्ची घटना : इस सन्दर्भ में मैं एक घटना का उल्लेख करना चाहूँगा, जो मेरे एक मित्र ने 10–12 वर्ष पहले मुझको सुनाई थी। मेरे मित्र अपनी नवविवाहिता पुत्रबधू को 'रोटी' में कुछ त्रुटी के बारे में प्रेम पूर्वक समझा रहे थे कि बहू ने खेद प्रकट करने या अनजाने में हुयी भूल सुधारने के बजाय शिष्टाचार, मर्यादा, मान–सम्मान को छींके पर रखकर तैश में आते हुए कहा कि वह सिर्फ अपने पति को ही मान्य समझती है और उसीके आदेशानुसार अपना कार्य एवं व्यवहार तय करती है। यदि रोटी कच्ची रह गयी या जल गयी तो इसमें उसका कोई दोष नहीं है। तवा ठीक से गरम नहीं होगा या अत्यधिक गरम होगा–इसमें वह क्या कर सकती है। इसी प्रकार सब्जी भी कच्ची रह सकती है। मेरा मित्र यह सुनकर स्तब्ध रह गया और अपने पुत्र की मूर्खता तथा बहू की चतुराई पर तरस खाने लगा। बातें करते–करते उसकी आँखों से आँसू बहने लगे और इतना ही कहा कि यह बताने में भी उसे शर्म आती है। मेरे जहन में यह घटना अभीतक घूम रही थी अतः आपके सामने भी रख रहा हूँ।

दहेज : यह एक ऐसी बुराई है जो अधिकांश घरों को ग्रसित करती है। कई सामान्य घरों में दहेज के अभाव में बड़ी–बड़ी कन्याएँ कुँवारी बैठी है। यह भी पारिवारिक अशान्ति का कारण बन जाता है। सीमित साधनों वाले जिन घरों में विवाह योग्य लड़का और लड़की दोनो हैं वहाँ भी दोहरापन देखा जाता है। लड़के की शादी में मुँहमाँगा दहेज चाहना और लड़की के लिए दहेज देने में मजबूरी। दहेज कानूनन अपराध है और इसको लेकर बहू को प्रताड़ित करना और भी जघन्य अपराध। जागरुक आस–पास वालों को इसका प्रतिवाद करना चाहिए और बात बढ़ने पर थाने में भी रिपोर्ट दर्ज करानी चाहिए। वैसे भी दहेज का लेन–देन दो समधियों के बीच का मामला है, निर्दोष बहू की इसमें कोई भूमिका नहीं है। **क्या (दहेज लोलुप) सास–ससुर इस बात को समझना चाहेंगे।**

आजकल कुछ युवक बिना दहेज, शादी के लिए अपने परिवार वालों को विवश करते हैं, वे प्रशंसा के पात्र है। प्रेम विवाह, अन्तर्जातीय विवाह और सामूहिक विवाह इसका समाधान हो सकता है।

कलह के कारण :–

मायका वालों का हस्तक्षेप, पड़ोसी, मामा का स्थायी निवास, संतान, अनमेल विवाह, कुटिलता, वैमनस्य, अविश्वास, पत्नी द्वारा उकसाना–बहकाना, डाह, द्वेष, अहंकार, निर्धनता, कर्कश वाणी, असन्तुलित आय, व्यय, स्वार्थ, लालच, सास, ननद, देवरानी, जिठानी, विवेकहीनता।

तलाक : यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि किसी का भी तलाक हो। भारतीय संस्कृति के बंधन में यह बात आम नहीं है। यह अन्तिम अस्त्र (ब्रह्मास्त्र) है जिसका प्रयोग सभी प्रयास विफल होने पर ही होना चाहिए। घरेलू कारण से कोई तलाक होता है तो युवतियों को विशेष कर यह समझ लेना होगा कि पुनर्विवाह बहुत ही कठिन है और सभी घरों में स्थिति कमोवेश एक समान है। सिर्फ मुआवजा पाने के लालच में युवतियाँ तलाक जैसी स्थिति बाध्य न करें, ऐसा करना उनके हित में तो नहीं ही होगा, और स्वयं के लिए खाई खोदने के समान होगा। हाँ शारीरिक या मानसिक कारणों से तलाक हो तो यह एक अनिवार्य मजबूरी है। जानबूझकर ऐसे कारणों को जो भी पक्ष खुलासा नहीं करते उन पर Criminal Case हो, और मुआवजे के तौर पर एक मोटी रकम पीड़ित पक्ष को दिलायी जाय।

माता–पिता : बच्चों के गुरु उनके माता–पिता होते हैं वो घर–घर में जो देखते हैं वही सीखते हैं। आज के टी.वी. व सूचना क्रांति युग में एक किशोर को इतनी अधिक जानकारी होती है जो उसे उम्र के अनुपात में नहीं होनी चाहिए। आज के परिवेश में एक बच्चे का, एक युवा का लालन–पालन कीचड़ में कमल–खिलने के समान है।

आसमां से ऊँचे होते है, पिता के अरमान।
सागर से गहरी होती है, माँ की ममता।।

अतः सुखमय भविष्य को दृष्टिगत रखते हुए इनका फर्ज बनता है कि बच्चों को एक अच्छा नागरिक बनने में मदद करें, बचपन से ही अनुशासन, शिष्टाचार, स्नेह, सम्मान, त्याग, सेवा, परोपकार का पाठ पढ़ाये। परिवार पोषण का दायित्व समाज के प्रति कर्तव्य और देश भक्ति का ज्ञान दें। **कुसंग का ज्वर बहुत भयानक होता है।** उन्हें बढ़ती उम्र के साथ नशीली दवाईयों, सिगरेट, जर्दा, शराब और जुआ जैसे बुरी आदतों से सावधान करें।

युवा : आपको ही बदलते समाज, बिखरते परिवार, टूटते रिश्ते को संजोना है, सवारना है। इच्छा शक्ति (Will Power) और दृढ़ संकल्प (Determination) के साथ इस प्रयास में कूद पड़ो, राहें अपने आप बनती जाएँगी।

विशेष : सुखमय जीवन के लिए ही विवाह सम्पादन होते हैं जो परिवार का आधार बनता है जिसमें होते हैं माता–पिता, दादा–दादी, चाचा–बुआ, भाई–बहन आदि। किन्तु क्या सुख पाने की लालसा पूर्ण हो पाती है या यह सिर्फ एक भुलावा है।

जीवन यात्रा अपने आप में एक अनोखा अनुभव है जो हर एक के लिए विभिन्न है। अधिकृत रुप में कोई भी समाधान संभव नहीं हो सकता है. बहुत सी बातें कथन में सरल पर करने में कठिन है। **अतः चर्चा विफल है।**

फिर भी यदि बड़े बुजुर्ग अपने बड़प्पन को गरिमामय बनाएँ रखे। **एक चुप सौ सुख की कहावत को अमल में लाएँ।** स्थिति अनुसार संतुलित भाषा में युक्ति संगत सलाह मशविरा प्रदान करें। यह ख्याल रखें कि छोटे–छोटेपन पर उतारु न हो जाए–तो हो सकता है दुखमय घर संसार में कुछ सुख की बूंदे मिल जायें। **सहनशीलता सुखमय घर संसार की महत्वपूर्ण कुंजी है!**

देह धरे का दण्ड है, सबको भुगते होय।
ज्ञानी भुगते शान से, मूरख भुगते रोय।।

– 138, कैनिंग स्ट्रीट, कोलकाता–1
(कमरा नं0 436), मोबाईल : 98300 84073

मरूसंस्कृति- तथ्यों के निकष पर

- डॉ. रामकुमार दाधीच

भारत के सांस्कृतिक इतिहास में मरुसंस्कृति शब्द का प्रयोग इतिहासविदों को चौंका सकता है, पर उपलब्ध नवीन तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में इतिहास का संशोधन एक अपरिहार्य युगधर्म है। इसी में इतिहास की जीवन्तता और विश्वसनीयता निहित है। नवीनतम पुरातात्विक अनुसन्धानों से सिद्ध हो रहा है कि मरुसंस्कृति के उल्लेख के बिना भारतीय इतिहास अधूरा रहेगा।

ब्रिटिश शासनकाल की कुछ स्थापनाएँ आज भी इतिहास लेखन का आधार बनी हुई हैं। अभिनव तथ्यों के प्रकाश में उनके बारे में पुनर्विचार जरुरी हैं। नवीन तथ्यों से सिद्ध होता है कि वैदिक संस्कृति भारत की सबसे पुरानी संस्कृति है। सांस्कृतिक इतिहास के ग्रन्थों में जिसे वैदिक संस्कृति का कालखण्ड कहा गया है वह भौगोलिक दृष्टि से सरस्वती नदी के अस्तित्व का युग था और उत्तरवैदिक कालखण्ड सरस्वती नदी से सिंचित भूमि के मरुधरा में परिवर्तित होने का युग था। मरुसंस्कृति से सम्बन्धित तीन महत्वपूर्ण शब्द हैं–मरु, मारवाड़ और मारवाड़ी।

वामन शिवराम आप्टे ने अपने प्रसिद्ध कोशग्रन्थ संस्कृत–हिन्दी कोश में मरुशब्द का विवरण देते हुए उसे एक देश और उसके अधिवासियों का नाम बताया है। तत्पश्चात मरुभू के विवरण में उसे मारवाड़ देश कहा है। मारवाड़ देश की भौगोलिक सीमाओं का उल्लेख उस प्राचीन युग के सन्दर्भ में अप्राप्त है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन तथा अखिल भारतीय युवा मंच के मुखपत्रों में मारवाड़ की भौगोलिक पहचान बताई गई है। उसके अनुसार सम्पूर्ण राजस्थान प्रदेश, सम्पूर्ण हरियाणा प्रदेश, मध्यप्रदेश के मालबा भूभाग तथा पंजाब के हरियाणा से सटे भूभाग को मारवाड़ कहा गया है। इस सारे क्षेत्र के निवासियों को मारवाड़ी कहा गया है। आजकल सामान्यत: राजस्थान के जोधपुर क्षेत्र को ही मारवाड़ माना जाता है। ऐसे में यह विस्तृत पहचान अटपटी लग सकती है किन्तु मारवाड़ के अतीत पर दृष्टिपात करने पर इसकी तथ्यपरकता सामने आ जाती है।

मरुसंस्कृति का उद्भवकाल वैदिक युग तक जाता है अत हमें वैदिक युग के भूगोल को जानना होगा। मारवाड़ क्षेत्र तब ब्रह्मवर्त, ब्रह्मर्षि देश और मध्यदेश इन तीन नामों से जाना जाता था। मनुस्मृति में ब्रह्मवर्त का भौगोलिक स्वरुप इस प्रकार बताया गया है–

सरस्वतीं–दृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम् ।
तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मवर्त प्रचक्षते।।

इस परिभाषा के अनुसार सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच का भूभाग ब्रह्मवर्त कहलाता था। पवित्रता के कारण इन नदियों को देवनदियाँ तथा मध्यवर्ती भूभाग को देवनिर्मित देश कहा गया है। इनमें सरस्वती नदी मुख्य तथा दृषद्वती उसकी सहायक नदी थी। सरस्वती नदी के प्रवाह क्षेत्र की पहचान से ब्रह्मवर्त की सीमा की कुछ अधिक स्पष्ट पहचान हो सकती है। दैनिक भास्कर समाचार पत्र (२५ जनवरी २०१०) के अनुसार सरस्वती नदी पंजाब व हरियाणा से होते हुए राजस्थान में गंगानगर जिले से प्रवेश करती थी।वहाँ से जैसलमेर के उत्तर–पश्चिमी भाग से होते हुए, बाड़मेर के पचपदरा कच्छ होते हुए अरब सागर में गिरती थी।

वहाँ ब्रह्मर्षिदेश का स्वरुप इस प्रकार बताया गया है–

कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पंचाला शूरसेनका।
एष ब्रह्मर्षिदेशों वै ब्रह्मवर्तादनन्तर।।

अर्थात ब्रह्मवर्त से सटा हुआ ब्रह्मर्षि देश था। उसमें कुरुक्षेत्र मत्स्य पंचाल और शूरसेन चार जनपद थे। इन जनपदों में कुरु–पंचाल जनपदों का प्राय साथ साथ उल्लेख मिलता है। हरियाणा–पंजाब के कुछ भू–भागों से राजस्थान के अजमेंर जिले तक का भू–भाग कुरु–पंचाल में था। राजस्थान के अलमेर, जयपुर, सीकर, नागौर और झुनझुनु जिले मत्स्य जनपद के तथा भरतपुर धौलपुर व उत्तर प्रदेश का मथुरा जिला शूरसेन जनपद के रुप में प्रसिद्ध थे। इस प्रकार मारवाड़ क्षेत्र की जो पहचान पूर्वोक्त दोनों संस्थाओं के मुखपत्रों में वर्णित है वह मनुस्मृति में वर्णित ब्रह्मवर्त और ब्रह्मर्षि देश के भौगोलिक विवरण से मेल खाता है।

.....क्रमश : अगले अंक में

- श्री कल्याण राजकीय आचार्य
संस्कृत महाविद्यालय
सीकर (राजस्थान)–332001
मोबाइल नं. – 9660311715

समीक्षा :

खामोशी में चीखती आवाज "गोपीचन्द भरथरी"

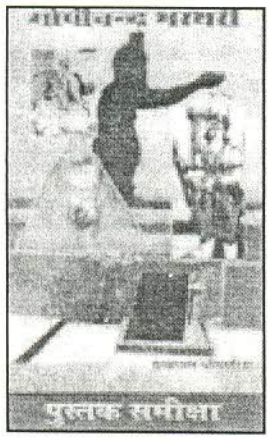

कोलकाता के साहित्यप्रेमी समाजसेवी सावरमल भीमसरिया ने लोककथा के एक नायक के माध्यम से समाज की मानसिकता में बदलाव लाने का अभिनव प्रयास किया है। गोपीचन्द भरथरी पुस्तक के माध्यम से लेखक ने समाज में व्याप्त बहुत सी बुराइयों को उकेरा है, साथ ही उसके समाधान का रास्ता भी सुझाया है।

जनजीवन के अभिन्न अंग के रुप में प्रचलित लोककथाओं की ऐतिहासिकता भले संदिग्ध हो पर आदिकाल से अस्तित्व में रहने की विलक्षणता के चलते इनके अस्तित्व से इंकार करना नामुमकिन है। आधुनिक होने की प्रक्रिया से पहले लोककथाओं ने भारतीय समाज को कितना प्रभावित किया इसका प्रमाण इसी बात से लगाया जा सकता है कि साक्षरता में निचले पायदान पर अवस्थित होकर भी सांस्कृतिक विरासत में भारतीय अद्वितीय थे। इसकी प्रमुख वजह थी प्रौढ़ व परिपक्व पीढ़ी द्वारा भावी पीढ़ी के दिलोदिमाग में लोककथाओं के माध्यम से ऐसी बातें भरना जो जीवन संग्राम में मार्गदर्शक साबित हो। भीमसरियाजी की दृष्टि में लोककथा के नायक चमक–दमक पूर्ण आधुनिक नायकों की बनिस्बत नींव की उन ईटों की तरह हैं जिनकी गाथाओं ने न जाने कितनों को अनुप्राणित किया जिससे देश और समाज की विकास यात्रा अबाध रुप से चलती रही।

गोपीचन्द भरथरी का जीवन भोग से योग की ओर उन्मुख एक ऐसे महान नायक का जीवन चरित्र है जिसकी दृष्टि मानवतावादी है। वह राजसिंहासन पर आरुढ़ होकर भी छल–प्रपंच, ऊंच–नीच, जात–पात की संकीर्णता से ऊपर हैं। अपने निर्णय में स्पष्टतावादी गोपीचंद भरथरी जनता की भावनाओं को पूरा सम्मान देते हुए अपना फैसला सुनाते हैं। उनकी धारणा है कि –सद्न्याय प्रक्रिया से ऊपर है वह सत्य शिव सुन्दर का सहचर है। सदाचार शील का अनुचर है विधि–नियम विवेक पर निर्भर है।

अंत में कोलकाता के धूमिल होते साहित्यिक–सामाजिक परिवेश में यह प्रयास कितना अंतर पैदा करेगा यह तो नहीं पता पर जैसा कि दुष्यंत ने कहा था – कैसे आकाश में सुराख नहीं हो सकता। एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो।। भीमसरिया जी द्वारा उछाला हुआ यह पत्थर थोड़ी सी भी हलचल पैदा करे तो बड़ी बात होगी, इसका पक्का यकीन है।◆

पुस्तक	: गोपीचन्द भरथरी
लेखक	: सावरमल भीमसरिया – 09830069999
प्रकाशक	: आकांक्षा वेलफेयर फाउण्डेशन
मूल्य	: 150 रुपये

आओ थोड़ा हँस लें :

एक दोस्त–यार तूने शराब कैसे छोड़ी?
दूसरा दोस्त–पूरी बोतल खत्म कर के।

◆◆◆

डॉक्टर पर्चे पर ऐसा क्या लिखते हैं कि मेडीकल स्टोर वाले ही समझ पाते हैं.....
रामू – वो लिखते है मैंने तो लूट लिया अब तू भी लूट ले।

◆◆◆

चिंटू पुरानी एलबम देखते हुए... मम्मी ये फोटो में आपके साथ इतना स्मार्ट कौन है?
मम्मी (चिंटू से) – ये तुम्हारे पापा हैं।
चिंटू – तो हम इस गंजे के साथ क्यों रहते हैं।

◆◆◆

व्यंग्य :

पड़ोसी की पीड़ा

-:: रामचरण यादव ::-

समाज सेवा का बीड़ा उठाने वाली जया को अचानक पड़ोसी की पीड़ा का ध्यान आया तो थैला उठाया और चल पड़ी उस बेचारे की पीड़ा हरने। सब ने मना भी किया मगर वह न मानी। परायी पीड़ा का अहसास शायद उसे बहुत पहले ही हो चुका था, तभी तो पड़ोसी की परेशानी देख नहीं सकती बल्कि उसे दूर करने में तुरन्त जुट जाती। जया भले ही गांव कि रहने वाली थी, किन्तु थोड़ी बहुत पढ़ी–लिखी होने के कारण अपने आप को किसी से कम न समझती थी। आई.ए.एस., एम.बी.बी.एस., आई.पी. एस. उसकी लाईन में नहीं लगते। बड़ी तेज तर्रार तथा समझदार जो थी। उसकी छोटी बहन ममता ने इन हरकतों को नजरअंदाज करते हुए बड़े प्यार से उसे बहुत समझाया, खूब मनाया, मगर उसने ब्याह नहीं रचाया। जीवन भर समाज सेवा के प्रति समर्पित जया अक्सर यही कहा करती कि मैं सभापति, राष्ट्रपति, लखपति, वनस्पति यहां तक द्रौपती बन सकती हूँ पर किसी कि पत्नी बनना मुझे स्वीकार नहीं। बेचारी ममता की मंशा तो शादी की थी लेकिन जब तक बड़ी बहन जया कुंवारी रहेगी भला उसकी शादी कैसे हो सकेगी। ममता की मर्जी के खिलाफ जया का क्रियाकलाप कुछ रास न आया। दोनों की अलग–अलग विचारधारा में एक कुंवारा बेचारा बैमौत मारा गया। पराये मर्द का दर्द भला वे क्या जानती कोई डाक्टर तो थी नहीं। एक दूसरे पर दोषारोपण के पश्चात यही निष्कर्ष निकाला कि न तुम शादी करो न हम शादी करे और न ही किसी शादी में शामिल होंगे।

महीनों बीत गये इस बात को पर उन दोनों बहनों पर क्या बीती तुम्हें क्या पता। मन में ब्याह रचाने की लालसा लिए ममता भला कब तक खामोश रहती, आखिर उसने चुपके से अपनी शादी का प्रस्ताव पड़ोसी के पास पहुंचा ही दिया। पड़ोसी ने भी काफी पसंद किया। इस प्रक्रिया का परिणाम बड़ा ही सुखद रहता परन्तु बीच में ही उसकी भनक जब जया को लगी तो वह तिलमिलाई और दौड़ी–दौड़ी आई। गुस्से में पचासों गाली बेचारे पड़ोसी को फोकट में दे डाली। पड़ोसी की पीड़ा हरने वाली अब स्वयं मां काली कि तरह भयानक रुप धरकर पड़ोसी पर बिफर पड़ी। शादी रचाने की बात दूर रही बेचारा ख्वाब भी नहीं सजा पाया था। सिर्फ प्रस्ताव स्वीकार करने पर ही इतनी सख्त सजा पाया कि जीवन भर पछताता रहा, किसी से कुछ न कहा चुपचाप सहता रहा। अपने सिद्धांतो पर अटल न रहकर ममता की जगह किसी और का हाथ मांगता तो शायद सफलता मिलती मगर अब न ममता मिली न जया, बेचारा दोनों जहान से गया। ये तो होना ही था। मगर उसे क्या पता, इस मामले में तो वह नया–नया था।

संयोगवश गर्मी की छुट्टियों में माया मौसी गांव घूमने आई तो किसी ने उन्हें भी पड़ोसी की करुण कहानी सुना दी। मौसी बड़ी प्रभावित हुई, व्यथा को कम करने के प्रयास में यह भी भूल गई कि वे भी इसी पीड़ा से पिछले पांच वर्षो से पीड़ित है। जीवित है तो सिर्फ इन्हीं की खुशी के खातिर जबकि उन्हें भली भांति मालूम है कि परहित सरिस धर्म नहीं भाई, पर पीड़ा सम न अधिमाई। फिर भी पड़ोसी को अपनी परिस्थिति पर पश्चाताप करते छोड़ वापस चली गई। अटल की शटल चले या न चले किसी को परवाह नहीं सभी प्रसिद्ध समाज सेवी बनकर सुपर फास्ट एक्सप्रेस से सीधे राजधानी की सैर करने को उतावली है। मीरा कृष्ण के लिए दीवानी बनी मगर ये तो शादी और सत्ता के लिए पागल और दीवानी है। इनकी तो वैसे बड़ी लम्बी–चौड़ी कहानी है। पर संक्षेप में पड़ोसी की परेशानी का जिक्र करना भी तो जरुरी है, क्योंकि पार्टी इतनी तगड़ी है कि पगड़ी उछालने में तनिक भी देर नहीं करती। परीक्षा की घड़ी में प्रतिज्ञा कर पास होना ही बहादुरी का काम जाना जाता है, वरना नैया तो किसी तरह पार होनी ही है। पड़ोसी की पीड़ा से हमें क्या लेना देना, उसके पास भी तो इस पीड़ा से मुक्ति के कुछ उपाय जरुर होंगे अगर न भी हो तो अपने आप उत्पन्न हो जायेंगे। हमें ज्यादा फिक्र करने की आवश्यकता नहीं, फिर भी एकदम पास रहने वाले इस पड़ोसी का मुरझाया सा उतरा हुआ चेहरा जब सामने आता है, तो दिल भर जाता है। त्रिशंकु की भांति न इधर का रहा न उधर का। इसीलिए तो तड़फ–तड़फ कर परदेशी पड़ोसन का प्यार भरा उपहार स्वीकार करने को तत्पर हुआ है। कहाँ उसकी परछाई से भी घृणा करता था, आज उसी की तरफदारी कर रहा है। मरता क्या नहीं करता और जो कुछ भी कर रहा है अपने लिए कर रहा है। हमें तो पता है न उसकी शादी होगी और न ही हम बाराती बनेंगे। हम जहाँ है वहीं रहेगें पर जाते–जाते यह जरुर कहेगें कि पड़ोसी की परवाह मत करना लेकिन पर देशी से प्रीत लगाने की गलती कभी न करना नहीं तो फिर पछताना पड़ेगा।

प्यार और व्यवहार बराबर वालों से हो तो फायदा वरना नुकसान के सिवाय कुछ नहीं, अब क्या गलत है क्या सही आप ही जानो। प्राचीन परम्परा के प्रति अगाध श्रद्धा और प्रेम रखने वाले पड़ोसी परशुराम जी वैसे तो काफी प्रसिद्ध थे। परम ज्ञानी, देशभक्त और परोपकारी भी थे। लालू थे न वे चालू थे अपितु बड़े ही दयालु, श्रद्धालु और न जाने कितने किस्म के आलू थे। पता नहीं पर जब कुर्सी का कीड़ा ही पड़ोसी की पीड़ा बन गया, तो हम क्या कर सकते हैं।

– प्रधान सम्पादक – ''नाजनीन''
सदर बाजार बैतूल (मध्यप्रदेश)–460001

सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों का स्वागत

नाम : राजेश अग्रवाल हीरा
कार्यालय का पता :
द्वारा श्री चन्दनमल सीताराम
डेली मार्केट
कांटाबांजी (उड़ीसा) – ७६७०३९
मोबाईल नं – ०९४३७१५४३६८

नाम : शंकर लाल अग्रवाल
कार्यालय का पता :
सुन्दरी साड़ी इम्पोरीयम
१६५ चित्तरंजन एवेन्यू
कलकत्ता– ७००००७
मोबाईल नं – ०९८३०७१४४८४

नाम : महाबीर प्रसाद जाजू
कार्यालय का पता :
जय सेल्स कार्पोरेशन
७५, नेताजी सुंभाष रोड, ३ तल्ला
कोलकाता–७०० ००१
मोबाईल नं – ०९८३११९४७६७

नाम : मनोज अग्रवाल
कार्यालय का पता :
बालाजी इन्टरप्राइजेज
४२, पथुरियाघाट स्ट्रीट
कोलकाता–७००००६
मोबाईल नं – ०९४३३००७७१०

सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों का स्वागत

नाम : श्री विनय मनौत (जैन)
कार्यालय का पता :
उदय चन्द्र रतनलाल
१, आर्मेनियन स्ट्रीट
कोलकाता–७००००१
मोबाईल नं – ०३३–२२४२३३८६

नाम : कृष्ण कुमार रुँगटा
कार्यालय का पता :
के.के.इन्टरप्राइज
१८, मल्लिक स्ट्रीट, तृतीय मंजिल
कोलकाता–७००००७
मोबाईल नं – ०९८३१०७५१२५

नाम : नरेन्द्र कुमार रुइया
कार्यालय का पता :
रुइया ट्रेडिंग कम्पनी
७३, कॉटन स्ट्रीट
कोलकाता–७००००७
मोबाईल नं – ०९८३००११८९३

नाम : महेश शर्मा
कार्यालय का पता :
११७ कॉटन स्ट्रीट
कोलकाता–७००००७
मोबाईल नं – ०९८३०४७५१७२

ऐसी ही होती है माँ

– गोविन्दी पोद्दार, कोलकाता

खुद के ही आँचल में छुपाकर लुका छिपि का खेल खेलती है माँ
एक–एक निवाला खिलाने को आँख मिचौली खेलती है माँ
सबकुछ जानते हुए भी अन्जान बन जाती है माँ
ऐसी ही होती है माँ–२
मेरे हर दर्द को अपना दर्द बना लेती है माँ
मेरी एक कराह पर कितनी बेचैन हो जाती है माँ
किस कदर अपने आसुँओ को आँखों में ही पी जाती है माँ
ऐसी ही होती है माँ–२
पता नहीं किस बात पर खिलखिला पड़ती है माँ
मालूम नहीं कब छलकती आँखों से बाहों में भर लेती है माँ
बिना किसी कारण ही सागर सी ममता उड़ेल देती है माँ
ऐसी ही होती है माँ–२
मेरे हर राज को सीने में दबा लेती है माँ
मेरी हर गलती पर पर्दा डाल देती है माँ
मेरी हर कमियों को करूणा से सजा देती है माँ
ऐसी ही होती है माँ–२
बिना बताये ही सबकुछ जान जाती है माँ
कंभी लगता है कितनी झूठ बोलती है माँ
पल भर में लगता है नहीं–नहीं सच से भी जयादा
सच्ची है माँ, ऐसी ही होती है माँ.....

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

Business Economics Subscription Form

Yes! I would like to subscribe **Business Economics**

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1080/-	1080/-	1080/-	144	72	☐ Tie + Scarf **OR** ☐ Books ☐ Any One Book out of above (For International)
☐	1 Year	24	360/-	360/-	360/-	48	24	☐ Scarf **OR** ☐ Books ☐ Any One Book out of above (For International)

Name : Mr./Ms. ____________________

Address : ____________________

____________________ City/District : ____________________

State : ____________ Country : ____________ Pin Code ☐☐☐☐☐☐

E-mail : ____________ Mobile : ____________ Landline : ____________ STD CODE

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. ____________ dated: ____________ for Rs. ____________ drawn on: ____________

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature: ____________ date: ____________

Mail your Cheque / DD to : Mr. Pramod Kr. Singh, General Manager, Business Economics, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : Kolkata : Ms. Sumita Agarwal : 033 2223-0368 • **Mumbai :** Rajendra Singh : 93208 73700
Chennai : Ms. S. Bhuvaneshwari : 044-4217 1320, 98416 54257 • **New Delhi :** Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima :** Povotso Lohe : 94360 05889

मारवाड़ी समाज की धरोहर

नवल किशोर डागा धर्मशाला

कोलकाता :

१. हरियाणा भवन, ४०—ए, विवेकानंद रोड, कलकत्ता—७, २. डागा धर्मशाला, ४१, कालीकृष्ण टैगोर स्ट्रीट, कलकत्ता—७, ३. नंदराम नेतराम बजाज की धर्मशाला, २३, बड़तल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता—७, ४. माहेश्वरी सदन, ३४—बी, रतु सरकार लेन (मित्र परिषद के पीछे), कलकत्ता—७, ५. टिबड़ेवाल भवन (जमनादास), १६४, चित्तरंजन एवेन्यू, कलकत्ता—७, ६. बाजोरिया भवन, २१२, विधान सरणी (वीणा सिनेमा के पास), कलकत्ता—६, ७. ओसवाल भवन, २—बी, नंदो मल्लिक लेन, कलकत्ता—७, ८. गोविंद भवन, महात्मा गाँधी रोड, कलकत्ता—७, ९. (मथुरादास) बिनानी धर्मशाला, ३१, पथरिया घाट स्ट्रीट, कलकत्ता—६, १०. बांगड़ धर्मशाला, ६५—ए, पथरिया घाट स्ट्रीट, कलकत्ता—६, ११. महेश्वरी भवन, ४, शोभाराम वैशाख स्ट्रीट, कलकत्ता—६, १२. श्री दिगंबर जैन भवन, मछुआ, १०—१,मदन मोहन बर्मन स्ट्रीट, कलकत्ता—७, १३. श्री अग्रसेन स्मृति भवन, पी—३०, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता—७, १४. हजारीमल दूधवेवाला धर्मशाला (चोर बागान), १९, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता—७, १५. कच्छी जैन भवन, ५९, इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता—७, १६. सेठ सागरमल लुहारीवाला स्मृति भवन, ३६—१, जितेंद्र मोहन एवेन्यू, कलकत्ता—७, १७. भारतीय धर्मशाला (सेठ चिमन लाल), ४४, जितेंद्र मोहन स्ट्रीट, कलकत्ता—६, १८. राजस्थान ब्राह्मण संघ भवन, १४—२, शोभाराम वैशाख स्ट्रीट, कलकत्ता—७, १९. श्रीमती केसरी देवी कानोड़िया हॉल, १२३, शोभाराम वैशाख स्ट्रीट, कलकत्ता—२९, २०. भोतिका धर्मशाला (श्यामदेव गोपीराम), १५०, महात्मा गाँधी रोड, कलकत्ता—७, २१. दौलतराम नोपानी धर्मशाला, २, नंदो मल्लिक स्ट्रीट, महात्मा गाँधी रोड, कलकत्ता—७, २२. मित्र परिषद, ११५, चित्तरंजन एवेन्यू, कलकत्ता—७, २३. श्री जालान स्मृति भवन, १६८, चित्तरंजन एवेन्यू, कलकत्ता—७, २४. जैन श्वेतांबर तेरापंथी भवन, ३, पोर्तुगीज स्ट्रीट, कलकत्ता—१, २५. ब्राह्मणबाड़ी, सैयद अली लेन, कलकत्ता—७, २६. पोद्दार छात्रावास भवन (छात्रावास), १५०. चित्तरंजन एवेन्यू, कलकत्ता—७, २७. हलवासिया छात्रावास भवन (छात्रावास), ब्रजदुलाल स्ट्रीट, कलकत्ता—७, २८. शार्दुल पुस्करण हाई स्कूल भवन, १—ए, सिकदर पाड़ा लेन, कलकत्ता—७, २९. बाबू लक्ष्मी नारायण बागला धर्मशाला, ५१, सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट, कलकत्ता—७, ३०. बाबू लाल अग्रवाल स्टेट, १६९, महात्मा गाँधी रोड, कलकत्ता—७, ३१. भगवानदास बलदेव दास धर्मशाला, ९,

मारवाड़ी समाज की धरोहर

भारतीय भाषा परिषद का भवन

स्वर्गीय श्री भागीरथ कानोड़िया एवं स्व. सीताराम सेक्सरिया केभागीरथ प्रयासों से निर्मित देश की जानी मानी संस्था भारतीय भाषा परिषद जो देश की समस्त भाषाओं को समृद्ध करने में अपना योगदान प्रदान कर रही है।

चोरबागान लेन, कलकत्ता–७, ३२. मारवाड़ी पंचायत धर्मशाला, ५१, सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट, कलकत्ता–७, ३३. नवल किशोर डागा (बीकानेर वाला), धर्मशाला, ४१, काली कृष्ण टैगोर स्ट्रीट, कलकत्ता–७, ३४. फूलचंद मुकिम चंद जैन धर्मशाला (श्वेतांबर–जैन), पी–३०बी, कालाकार स्ट्रीट, कलकत्ता–७, ३५. रामचंद्र गोयनका धर्मशाला, ३६१, कालीघाट रोड, कलकत्ता–२६, ३६. मूँधड़ा धर्मशाला, २०–१, रतन सरकार गार्डन स्ट्रीट, कलकत्ता–७।

हावड़ा :

१. गोपाल भवन, ३ गुड़ गोला घाट रोड, बांधाघाट, हावड़ा–६, २. श्री सत्यनारायण धर्मशाला (सुरेका) १, सत्यनारायण टेंपल रोड, बांधाघाट, हावड़ा, ३. साधुराम तोलाराम गोयनका धर्मशाला, मटरुमल लोहिया लेन, बांधाघाट, हावड़ा, ४. अग्रसेन भवन, २, डोबर लेन (लिलुआ स्टेशन रोड), हावड़ा, ५. माधोगढ़ नागरिक परिषद, डबसन रोड (नीयर ए.सी. मार्केट), हावड़ा।

चिकित्सालय–औषधालय :

१. मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, २२७, रवींद्र सरणी, कलकत्ता–७, २. श्री विशुद्धानंद सरस्वती मारवाड़ी हास्पीटल, ११८, राजा राम मोहन राय सरणी, कलकत्ता–७, ३. रामरिकदास हरलालका अस्पताल, १०४, आषुतोश मुखर्जी रोड, कलकत्ता–७, ४. लोहिया मातृ सेवा सदन, ४३, रवींद्र सरणी, कलकत्ता–७, ५. मातृमंगल प्रतिष्ठान, २२८, रवींद्र सरणी, कलकत्ता–७, ६. आशाराम भिवानीवाल अस्पताल, ५५, काली कृष्ण टैगोर स्ट्रीट, कलकत्ता–७, ७. बागला अस्पताल, महात्मा गाँधी रोड, कलकत्ता–७, ८. घासीराम बूबना आंख अस्पताल, १३८, महात्मा गाँधी रोड, कलकत्ता–७, ९. विशुद्धानंद सरस्वती दातव्य औषधालय, ३५–३७, बड़तल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता–७, १०. दिगंबर जैन दातव्य औषधालय, २५, गोयनका लेन, कलकत्ता–६, ११. अम्बिका आयुर्वेद भवन, ६–१, बाबू लाल लेन, कलकत्ता–६, १२. गोविन्द दातव्य औषधालय, बांसतल्ला लेन, कलकत्ता–७, १३. आनंदलोक, सी.के. ४४, साल्टलेक सिटी, कलकत्ता–९१, १४.माहेश्वरी दातव्य औषधालय, २३, कालीकृष्ण टैगोर स्ट्रीट, कलकत्ता–७, १५. रामकृष्ण दातव्य औषधालय, ४, गोयनका लेन, कलकत्ता–७, १६. हनुमान हास्पीटल, घुसड़ी, हावड़ा, १७. मारवाड़ी आरोग्य भवन, जसीडीह।

मारवाड़ी समाज की धरोहर

बैकुण्ठनाथ मंदिर का एक दृश्य

पुस्तकालय :

१. श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, १—सी, मदनमोहन बर्मन स्ट्रीट, कलकत्ता—७, २. मारवाड़ी सभा पुस्तकालय, बड़ाबाजार, कलकत्ता—७, ३. श्री तरुण संघ पुस्तकालय, १२६, चित्तरंजन एवेन्यू, कलकत्ता—७, ४. मारवाड़ी छात्र संघ पुस्तकालय, १५०, चित्तरंजन एवेन्यू, कलकत्ता—७, ५. श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी पुस्तकालय, ३, पोर्तुगीज स्ट्रीट, कलकत्ता—७, ६. श्री फतेहपुर ब्राह्मण पंचायत पुस्तकालय, तीसी बाड़ी, तुलापट्टी, कलकत्ता—७, ७. श्री हनुमान पुस्तकालय, ७६—जे.एम.मुखर्जी रोड, घुसड़ी, हावड़ा, ८. महावीर पुस्तकालय, १०—ए, चित्तरंजन एवेन्यू, कलकत्ता—७, ९. सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय, १८६, चित्तरंजन एवेन्यू, कलकत्ता—७, १०. बड़ाबाजार लाइब्रेरी, १०—१—१, सैयद अली लेन, कलकत्ता—७३, ११. माहेश्वरी पुस्तकालय, ४, शोभाराम वैशाख स्ट्रीट, कलकत्ता—७, १२. भारतीय भाषा परिषद, ३६ ए, शेक्सपीयर सरणी, कलकत्ता—१७।

श्री मारवाड़ी दातव्य औषधालय, गुवाहाटी

मारवाड़ी समाज की धरोहर

विद्या मंदिर,
कोलकाता

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी,
कोलकाता

विशुद्धानन्द हॉस्पिटल,
कोलकाता

मारवाड़ी समाज द्वारा सीपित देश की पहली बालिका विद्यालय जहां स्वतंत्रता आन्दोलन के समय क्रान्तिकारियों का केन्द्र विन्दु भी रहा है। इस बालिका विद्यालय में महात्मा गांधी भी आ चुके है।

सम्मेलन के नये संरक्षक सदस्य

संरक्षक सदस्य संख्या–१२८
नाम : पायोनियर मैनेजमेन्ट लिमिटेड
प्रतिनिधि : रवीन्द्र खेतान
कार्यालय का पता :
राउडन इनक्लेव, प्रथम तल्ला
१०ए, राउडन स्ट्रीट
कलकत्ता–७०००१७
दूरभाष : (०३३) २२५१७१६६
फैक्स : ०३३–४००६९०००
मोबाईल : ९८३००६९०४२
ई–मेल info@pioneerproperty.in
निवास का पता :
सिल्वर स्प्रिंग
ब्लाक – ४, फ्लैट – ५ए,
५ जे.बी.एस. हाल्डेन एवेन्यू
कोलकाता–७००१०५

संरक्षक सदस्य संख्या–१२९
नाम : नारायणी सन्स प्राईवेट लिमिटेड
प्रतिनिधि : दीनानाथ पसारी
कार्यालय का पता :
स्टेशन रोड
मु० पो० बड़बील
जी० केन्दूझर
उड़ीसा
दूरभाष : (०३३) २२८३६९४२
फैक्स : (०३३) २२८३६९४२
मोबाईल : ०९८३००१८१९३
ई–मेल : upnspl@yahoo.co.in
निवास का पता :
२डी गारडेनीया हाऊस
२२७/ १ए आचार्य जगदीश चन्द्र बसु रोड
कोलकाता–७०००२०

मारवाड़ी समाज की संस्थाएं

भारतीय भाषा परिषद

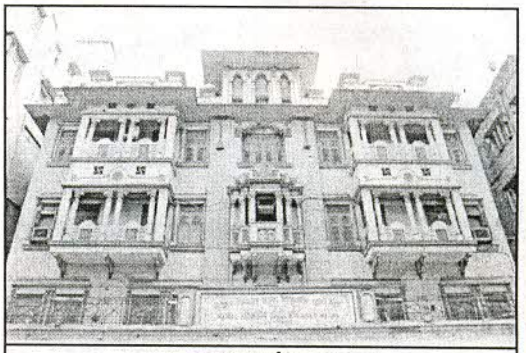

डागा धर्मशाला

क्लब :

१. श्री माहेश्वरी क्लब, २. नीबूतल्ला स्पोर्टिंग क्लब, ३. श्री पुष्टिकर क्लब, ४. नवजीवन क्लब, ५. फ्रेंड्स मुनिमन क्लब, ६. हिंदुस्तान क्लब, ७. बंगाल रोईंग क्लब, ८. राजस्थान नवयुवक क्लब, ९. जोधपुर एसोसिएशन, १०. बिड़ला क्लब।

सामाजिक–सांस्कृतिक संस्थाएं :

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन (मारवाड़ी समाज की प्रतिनिधि संस्था) १५२–बी, महात्मा गाँधी रोड, कलकत्ता–७०००७, २. अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच (मारवाड़ी युवकों की प्रतिनिधि संस्था) ३४३२–१३, हसन बिल्डिग, निकलसन रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली–११०००६, ३. मित्र परिषद, ४. अग्रसेन भवन, ५. राणीसती प्रचार समिति, ६. श्री श्याम मित्र मण्डल, ७. नागरिक स्वास्थ्य संघ, ८. झुन्झूंनू प्रगति संघ, ९. माहेश्वरी पंचायत, १०. ओसवाल नवयुवक संघ, ११. सेठ सूरजमल जालान वस्तु भण्डार, १२. राजस्थान जन सम्पर्क समिति, १३. कुम्हारटोली सेवा समिति, १४. ओसवाल भवन, १५. काशी विश्वनाथ सेवा समिति, १६. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, १७. श्री श्याम प्रेम मण्डल, १८. अग्रवाल सेवा संघ, १९. रतनगढ़ नागरिक परिषद, २०. केडिया समाज, २१. बजाज भरतिया सभा, २२. श्री राणीसती भक्त मण्डल, २३. श्री श्याम सत्संग मण्डल, २४. श्री शिव शक्ति सेवा समिति, २५. पुष्टिकर सेवा समिति, २६. हनुमान परिषद, २७. माहेश्वरी नवयुवक सेवा समिति, २८. अहिंसा प्रचारक समिति, २९. मारवाड़ी सेवा समिति, ३०. श्री बजरंग परिषद, ३१. माहेश्वरी सेवा समिति, ३२. माहेश्वरी एजुकेशन बोर्ड, ३३. जन सेवा संघ, ३४. जैन श्वेताम्बर मित्र मण्डल, ३५. माहेश्वरी महिला समिति, ३६. मारवाड़ी युवा मंच, ३७. कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी, ३८. पश्चिम बंगाल मारवाड़ी सम्मेलन ३९.भारतीय भाषा परिषद, ४०. भारतीय संस्कृति संसद, ४१.परिवार मिलन, ४२. विकास, ४३. अर्चना (नाट्य मंच), ४४. अनामिका (नाट्य मंच), ४५. पदातिका (नाट्य मंच), ४६. माहेश्वरी संगीतालय, ४७. हिंदी नाट्य परिषद, ४८. संगीत कला मन्दिर, ४९. रामगढ़ महाजन संघ, ५०. खण्डेलवाल परिषद, ५१. श्री माली ब्राह्मण युवक मण्डल, ५२. तरुण संघ, ५३. दधीच सभा, ५४. राजस्थान परिषद, ५५. साल्टलेक संस्कृति संसद, ५६. विधान नगर संस्कृति संसद, ५७. पूर्वांचल कल्याण आश्रम, ५८. माहेश्वरी समाजोत्थान समिति, ५९. हावड़ा जिला मारवाड़ी सम्मेलन, ६०. पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, ६१. श्री मैढ़ क्षत्रिय सभा, ६२. विद्यालय विकास समिति, ६३. शक्ति दल, ६४. कलकत्ता नागरिक संघ, ६५. मानव सेवा संघ, ६६. रिसड़ा जन सेवक संघ, ६७. माहेश्वरी भवन (रिसड़ा), ६८. मिलनश्री ६९.

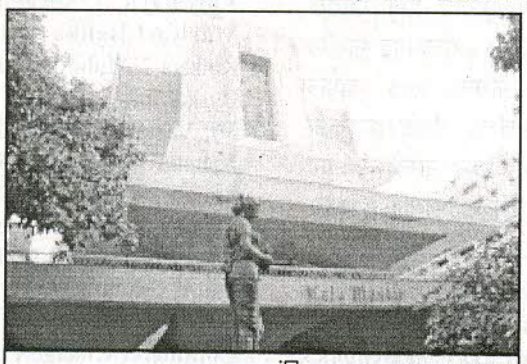

कला मंदिर

मारवाड़ी समाज की धरोहर

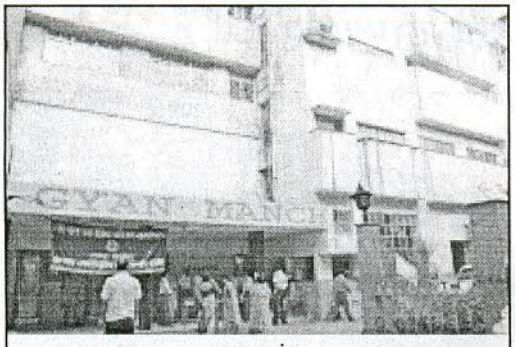

ज्ञान मंच

मारवाड़ी बालिका विद्यालय

सलकिया सेवा संघ, ७०. ब्राह्मण (राजस्थान हरियाणा) संघ, ७१. सरदार शहर परिषद, ७२. बीदासर नागरिक परिषद, ७३. नागौर नागरिक संघ, ७४. कौटपुतली नागरिक परिषद, ७५. लक्ष्मणगढ़ नागरिक परिषद, ७६. विकास परिषद चाडवास, ७७. नीमकाथाना अंचल नागरिक संघ, ७८. राजगढ़ सादुलपुर नागरिक परिषद, ७९. देशनोक युवा मंच, ८०. अलसीसर सेवा संघ, ८१. राजलदेसर नागरिक परिषद, ८२. गंगाशहर नागरिक परिषद, ८३. नापासर युवा मंच, ८४. रतनगढ़ नागरिक परिषद, ८५. श्री भादरा परिषद, ८६. लोसल नागरिक परिषद, ८७. श्री माधोपुर नागरिक परिषद, ८८. मंड्रेला नगर विकास परिषद, ८९. चुरु नागरिक परिषद, ९०. तारानगर युवक परिषद, ९१. रामगढ़ नागरिक परिषद, ९२. रतन नगर परिवार (कलकत्ता), ९३. स्टार सिटी यूथ फेडरेशन, ९४. बीकानेर अंचल नागरिक परिषद, ९५. छापर नागरिक परिषद, ९६. हरसोर नागरिक परिषद, ९७. नोखा नागरिक परिषद, ९८. जोधपुर एसोसिएशन, ९९. निम्बीजोधां नागरिक परिषद, १००. छोटीखाटू नागरिक परिषद, १०१. श्री माधोपुर विकास परिषद, १०२. राजस्थान जनकल्याण समिति, १०३. सांभर क्लब, १०४.मलसीसर चेरिटी ट्रस्ट, १०५. लाडनूं नागरिक परिषद, १०६. सीकर परिषद, १०७. श्री डूंगरगढ़ नागरिक परिषद, १०८. अजमेर एसोसिएशन, १०९. मेवाड़ मित्र मण्डल, ११०. श्री डीडवाना नागरिक सभा, १११. सुजानगढ़ नागरिक परिषद, ११२. मुकुन्दगढ़ नागरिक परिषद, ११३. खंडेला नागरिक परिषद, ११४. भीनासर नागरिक परिषद कलकत्ता, ११५. पूर्वांचल नागरिक समिति, ११६. महेन्द्र नागरिक परिषद, ११७.श्री जैन सभा, ११८. भारत रिलिफ सोसाइटी, ११९. अग्रवाल परिणय–सूत्र समिति।

विद्यालयों की सूची :

Ashoka Hall, 5A, Sarat Bose Road, Kolkata-20, **Daulat Ram Nopany Vidyalaya**, 2D, Nando Mullick Lane, Kolkata-6, **Birla High School**, 1, Moira Street, Kolkata-17, **Haryana Vidya Mandir**, BA/193, Sector-I, Salt lake City, Kolkata-64, **Junior Birla High School**, 1, Moira Street, Kolkata-17, **Sri Jain Vidyalaya**, 25/1, Bon Bihari Bose Road, Howrah, **Mahadevi Birla Shishu Vihar**, 4, Iron Side Road, Kolkata-19, **M.B.Girls High School**, 17, Darga Road, Kolkata-17, **M.P.Birla Foundation H.S.School**, James Long Sarani, Kolkata-34, **Modern High School for Girls**, 78, Syed Amir Ali Avenue, Kolkata-19, **Sri Sikshayatan**, 11, Lord Sinha Road, Kolkata-71, **South Point School**, 87/7A, Ballygunge Place, Kolkata-19, **Abhivav Bharati High School**, 211, Pritoria Street, Kolkata-71, **Balika Siksha Sadan**, 87, Vivekananda Road, Kolkata-6, **Balika Vidya Bhawan**, 41, Brajodulal Street, Kolkata-7, **Digambar Jain Vidyalaya**, P34/35, Cotton Street, Kolkata-7, **Digambar Jain Balika Vidyalaya**, 211, M.G.Road, Kolkata-7, **Gyan Bharati Vidyapith**, 64A, Nimtallaghat Street, Kolkata-6, **Gyan Bharati Balika Vidyalay**, 64A, Nimtallaghat Street, Kolkata-6, **Shree Jain shikshalaya**, P-25, Kalakar Street, Kolkata-7, **Shree Jain Swetambar Terapanthi Vidyalaya**, 3, Portugese Church Street, Kolkata-7, **Maheshwari Girls School**, 273, Rabindra Sarani, Kolkata-6, **Maheshwari Vidyalaya**, 4, Sovaram Bysack Street, Kolkata-7, **Marwari Balika Vidyalaya**, 29, Banstolla Lane, Kolkata-7, **Maheshwari Balika Vidyalaya**, 4, Sovaram Bysack Street, Kolkata-7, **Rajasthan Vidya Mandir**, 36, Varanasi Ghosh Lane, Kolkata-7, **Saraswat Kshetriya Vidyalaya**, 4, Burman Street, Kolkata-7, **Set Surajmal Jalan Balika Vidyalaya**, 186, Chitaranjan Avenue, Kolkata-7, **Tantia High School**, 2, Syed sally Lane, Kolkata-73, **Visuddanand Saraswati Vidyalaya**, 160A, Chittaranjan Avenue, Kolkata-7, **Jalan Girls College**, College Street, Kolkata-12, **Goenka Commerce College**, Bow Bazar Street, Kolkata-12.

मारवाड़ी समाज की धरोहर

बम्बई में मारवाड़ी समाज की संस्थाएं

१. मारवाड़ी सम्मेलन, २२७, कालबा देवी रोड, मुम्बई–४०००००२, (क) श्री मती भागीरथीबाई मानमल रुई महिला महाविद्यालय, (ख) सीताराम पोद्दार बालिका विद्यालय, (ग) श्री शिव कुमार भुवालका हिंदी पुस्तकालय। २. बम्बई अस्पताल, १२, वी. ठाकरसी मार्ग, मुम्बई–४०००२०, ३. राजस्थानी महिला मण्डल, १२, क्रा. वसंतराव नाईक क्रॉस लेन, फोर्जेट स्ट्रीट, ग्वालियर टैंक, मुम्बई – ४०००३६, ४. राजस्थानी सम्मेलन, मालाड (सर्वोदय बालिका विद्यालय भवन), एस. विही. रोड, मालाड, मुम्बई–४०००६४ (क) सर्वोदय बालिका विद्यालय, (ख) घनश्यामदास सराफ कालेज ऑफ आर्ट्स एण्ड कामर्स (ग) धूड़मल बजाज भवन, ५. मारवाड़ी विद्यालय हाई स्कूल, सरदार बल्लभ भाई पटेल मार्ग, गिरगांव, मुम्बई – ४००००४, ६. मारवाड़ी कामर्शियल हाई स्कूल, (संचालित–हिंदुस्तान चेम्बर ऑफ कामर्स), गजधर गली, चीरा बाजार, मुम्बई–४००००२, ७. नवजीवन विद्यालय हाई स्कूल, मालाड (संचालित राजस्थान रिलीफ सोसाइटी), राणीसती मार्ग, मालाड (पूर्व), मुम्बई–४०००५७, ८. राजस्थान विद्यार्थी गृह, अंधेरी, लल्लू भाई पार्क, अंधेरी (प.) मुम्बई–४०००५८, ९.बृजमोहन लक्ष्मीनारायण रुईया, बहुदेश्य हाई स्कूल, विले पार्ले, महंत रोड, विले पार्ले (पूर्व), मुम्बई–४०००५७, १०. श्रीमती दुर्गाबाई, बृजमोहन लक्ष्मी नारायण रुईया, प्राथमिक म्युनिसिपल शाखा, महंत रोड, विलेपार्ले (पूर्व) मुम्बई–४०००५७, ११. जमनादास अड़किया बालिका विद्यालय, कांदिवली, राम गली, विवेकानंद रोड, मुम्बई–४०००६७, १२.हिंदी हाई स्कूल–घाटकोपर, झुनझुनूवाला कालेज के पीछे, घाटकोपर, मुम्बई–४०००८६, १३. रामनिरंजन झुनझुनवाला आर्ट्स एण्ड साईंस कालेज–घाटकोपर, (संचालित–हिंदी विद्या प्रचार समिति), घाटकोपर, मुम्बई–४०००८६, १४. प्रह्लाद राय डालमिया लायंस कालेज ऑफ कामर्स, सुन्दर नगर, एस. व्ही. रोड, मालाड (प.), मुम्बई–४०००६४, १५. श्रीमती कमलादेवी गौरीदत्त मित्तल, पुनर्वसु आयुर्वेद कालेज एवं अस्पताल, (संचालक–आयुर्वेद प्रचार संस्था), नेताजी सुभाष रोड, मुम्बई–४०००१९, १६. रामनारायण रुईया कालेज, माटूंगा रेलवे स्टेशन (म.रेलवे), मुम्बई–४०००१९ १७.रामदेव आनन्दोलाल पोद्दार आयुर्वेदिक कालेज, वरली नाका, (महाराष्ट्र सरकार द्वारा संचालित), वरली, मुम्बई–१८, १८. किशनलाल जालान धमार्थ आयुर्वेदिक औषधालय,किसन रोड, मालाड (प.) मुम्बई–४०००६४, १९.हरियाणा नागरिक संघ, २१२–२१६, रंगमहल, सेम्युअल स्ट्रीट, मुम्बई–४०००००३, २०. हरियाणा मित्र मण्डल, ३३७, कालवा देवी रोड, मुम्बई–४०००००२, २१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल जातीय कोष, २२७, कालबा देवी रोड, मुम्बई–४०००००२, २२. माहेश्वरी प्रगति मण्डल, ६०३, जगन्नाथ शेकर सेठ रोड, मुम्बई–४०००००२, २३. राजपूताना शिक्षा मण्डल, २२७, कालबा देवी रोड, मुम्बई –४०००००२, २४. राजस्थानी नेशनल ग्रेज्युएट्स एसोसिएशन, ५०१, निरंजन, ९, मरीन ड्राईव, मुम्बई–४०००००२, २५. राजस्थानी सेवा संघ, जे. बी. नगर, अंधेरी, मुम्बई–४०००५९, २६. श्री घनश्यामदास पोद्दार विद्यालय, जे. बी. नगर, अंधेरी, मुम्बई–४०००५९, २७. श्री गुरुमुखराय सुखानंद दिगम्बर जैन धर्मशाला, सी. पी. टैंक, मुम्बई–४००००४, २८. मारवाड़ी फतेहपुरिया पंचायती बाड़ी ट्रस्ट, ४१–२, पांजारापोल लेन, मुम्बई–४००००४, २९. सत्यनारायण गोयनका भवन, (पंचायती सेवा ट्रस्ट), जे.बी. नगर, अंधेरी, मुम्बई–४०००५९, ३०. नेमानी वाड़ी, ६१, ठाकुरद्वार रोड, मुम्बई–४०००००२, ३१. नाथूराम पोद्दार बाग ट्रस्ट, १११–११९, ठाकुर द्वार रोड, मुम्बई–४०००००२, ३२. बिड़ला वाड़ी, आर–६–३०, सीताराम पोद्दार मार्ग, मुम्बई–४०००००२, ३३. दाखीबाई सिंघानिया धर्मशाला वाड़ी ट्रस्ट, १८, दादीशेठ अग्यारी लेन, मुम्बई–४०००००२, ३४. सराफ मातृ मंदिर, मालाड, (मालाड को–आ. हॉ. सोसाइटी के सामने), पोद्दार रोड, मुम्बई–४०००९७, ३५. रुईया वाड़ी, मालाड, (मालाड स्टेशन के पास), कस्तूरबा रोड, मालाड, मुम्बई–४०००६४, ३६. राजपुरिया बाग (मदनलाल राजपुरिया ट्रस्ट), नवीनभाई ठक्कर मार्ग, विले पार्ले (पूर्व), मुम्बई–४०००५७, ३७. अग्रवाल सेवा समाज, अग्रसेन भवन, २५१, ठाकुरदास रोड, मुम्बई–४०००००२, ३८. झुंझुनू प्रगति संघ, २२७, कालबा देवी रोड, मुम्बई–४०००००२, ३९. राजस्थानी सेवा समिति, १–ए. २२, नालन्दा एवरशाईन नगर, मुम्बई –४०००६४, ४०. राणीसती सार्वजनिक औषधालय, ५०८, मालाड को.आ.हा.सो., मालाड, मुम्बई–४०००९७, ४१. राजस्थानी वेल्फेयर एसोसिएशन, २२, बी. देसाई रोड, मुम्बई–४०००२६, ४२. नवलगढ़ नागरिक संघ, ३०७–३०९, कालबा देवी रोड, मुम्बई–४०००००२, ४३. बिड़ला ब्राह्मण वाड़ी, ९८, व्ही.पी.रोड, मुम्बई–४००००४, ४४. बिड़ला चैरिटेबल डिस्पेंसरी, १८, व्ही.पी.रोड, मुम्बई–४००००४, ४५. फतेहपुर शेखावटी प्रगति संघ, २१२, कालबा देवी रोड (२ माला), मुम्बई–४०००००२, ४६. राजस्थान कला केंद्र, नीलम मेंशन, भडकमकर मार्ग, मुम्बई–४००००४।

मारवाड़ी समाज की धरोहर

मारवाड़ी समाज द्वारा अन्य प्रांतों में किए गए सेवा कार्यों की एक झलक

मारवाड़ी हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर, गुवाहाटी

उड़ीसा प्रांत :

१. हिन्दी विद्यालय, जटनी, २. वैश्य विद्यालय, कटक, ३. हिन्दी बालिका विद्यालय, बरगढ़, ४. हिन्दी एम.ई.स्कूल, सम्बलपुर, ५. हिन्दी स्कूल खेतराजपुर, सम्बलपुर, ६. हिन्दी स्कूल, बरगढ़, ७. हिन्दी विद्यालय, बलांगीर, ८. महाबीर हिन्दी विद्यालय, टीटलागढ़, ९. कौशल हिन्दी विद्यालय, तुसरा पटना स्टेट, १०. वीर प्रताप हिन्दी विद्यालय, तरमा, ११. ओरिएण्ट पेपर मिल हाई स्कूल, वृजराज नगर, १२. मारवाड़ी विद्या मन्दिर, झारसुगड़ा, १३. हिन्दी विद्यालय, जूनागढ़, १४. मारवाड़ी विद्यालय, खड़गप्रसाद, १५. राष्ट्रीय हिन्दी विद्यालय, १६. श्री मुकुन्दीलाल अग्रवाल महिला महाविद्यालय, १७. चमेली देवी महिला महाविद्यालय १९९८ में।

पुस्तकालय :

१. हिन्दी साहित्य समिति पुस्तकालय, कटक, २. हिन्दी पुस्तकालय, जटनी, ३. राष्ट्रीय पुस्तकालय, बालेश्वर, ४.श्री कृष्ण पुस्तकालय, सम्बलपुर, ५. हनुमान पुस्तकालय, सम्बलपुर, ६. हिन्दी छात्र संघ पुस्तकालय, बरगढ़, ७. कस्तूरबा पुस्तकालय, खेतराजपुर।

धर्मशालाएं :

१. रामचन्द्र गोयनका धर्मशाला, पुरी, २. देवीदत्त दूधवेवाला धर्मशाला, पुरी, ३. कन्हैयालाल बागला धर्मशाला, पुरी, ४. गनपतराम खेमका धर्मशाला, पुरी, ५. आज्ञाराम मोतीराम कोठारी धर्मशाला, पुरी, ६. चिमनलाल गनेड़ीवाला धर्मशाला, पुरी, ७. सूरजमल नागरमल गेस्ट हाउस, पुरी, ८. हलवासिया धर्मशाला, साखी गोपाल, भुवनेश्वर, ९. दूधवेवाला धर्मशाला, भुवनेश्वर, १०. मारवाड़ी धर्मशाला, सोनपुर, ११. घासीराम जी भोलानाथ धर्मशाला, कटक, १२. इच्छाराम जी बदरी प्रसाद धर्मशाला, कटक, १३. गोपीनाथ जी की धर्मशाला, कटक (दो धर्मशाला), १४. पंचायती मारवाड़ी धर्मशाला, अंगुल, १५. मारवाड़ी धर्मशाला, जाजपुर, १६. बदरीप्रसाद पतंगिया धर्मशाला, भुवनेश्वर, १७. मारवाड़ी धर्मशाला, रायरंगपुर, १८. मारवाड़ी धर्मशाला, सम्बलपुर, १९. पालीराम जी की धर्मशाला, सम्बलपुर, २०. मामचन्द मूलचन्द जी की धर्मशाला, झाड़सुगड़ा, २१. मारवाड़ी धर्मशाला, झारसुगुड़ा, २२. जानकीदास गणपत राम की धर्मशाला, झारसुगुड़ा, २३. मारवाड़ी धर्मशाला, बलांगीर, २४. मारवाड़ी पंचायती धर्मशाला, बरागढ़, २५. मारवाड़ी धर्मशाला, टीटलागढ़, २६. मारवाड़ी धर्मशाला, कांटाबाजी, २७. मारवाड़ी धर्मशाला, तुसरा, २८. मारवाड़ी धर्मशाला, तरभा, २९. हरिभवन (धर्मशाला), ३०. श्री गोपाल गोशाल, ३१. सेठ बालकिशन दास अग्रवाल (ध र्मशाला) ३२. श्री अग्रसेन भवन कम्पलेक्स, ३३. श्री राम मंदिर, ३४. श्री राधाकृष्ण मंदिर, ३५. श्री

राउरकेला का भवन

मारवाड़ी समाज की धरोहर

दुर्गा पूजा पंडाल भवन, ३६. श्री जैन भवन, ३७. श्री ब्राह्मण धर्मशाला (निर्माणाधीन) है। ३८. पुरानी धर्मशाला १९५५ में, ३९. न्यू धर्मशाला १९७५ में, ४०. अग्रसेन भवन २०१० में, ४१. गायत्री मन्दिर २००० में, ४२. अग्रसेन भवन मारवाड़ी धर्मशाला, ४३. गुलाब भवन मारवाड़ी धर्मशाला।

गौशाला :

सम्बलपुर, बरगढ़, झाड़सुगुड़ा, बालेश्वर, राजगांगपुर, भद्रक, सोरों, कटक।

डिब्रूगढ़ (असम) :

१. सेठ रामेश्वर सहरिया स्मृति भवन, २. भगवानदास गाड़ोदिया स्मृति भवन, ३. सूरजमल जालान बालिका शिक्षा सदन, ४. श्री मारवाड़ी हिन्दी पुस्तकालय, ५. लाल चन्द कनोई मेमोरियल ऑडिटोरियम, ६. श्री गोपाल गोशाला, ७. मनोहर देवी कनोई महिला महाविद्यालय, ८. डिब्रूगढ़ हनुमान बक्स सूरजमल कनोई वाणिज्य महाविद्यालय, ९. श्री राधाकृष्ण देवस्थानम (मन्दिर) जालान नगर, १०. श्री वेंकटेश देवस्थानम (मन्दिर), ११. मारवाड़ी आरोग्य भवन, अस्पताल, १२. श्री विश्वनाथ मारवाड़ी दातव्य औषधालय, १३. डिब्रूगढ़ हनुमान बक्स सूरजमल कनोई महाविद्यालय, १४. डिब्रूगढ़ हनुमान बक्स सूरजमल कनोई, कानून महाविद्यालय, १५. मारवाड़ी हिन्दी हाई स्कूल, १६. मारवाड़ी हिन्दी प्राइमरी स्कूल (जालान नगर) १७. श्री अग्रसेन मिलन मन्दिर, १८. श्री राधाकृष्ण मन्दिर, १९. श्रीदेरगाँव मारवाड़ी पंचायत धर्मशाला (तीन मंजिली), २०. श्रीमारवाड़ी सत्यनारायण ठाकुरबाड़ी, २१. श्रीशिवलाल बाँयवाला बी.एड.कालेज, २२. सार्वजनिक हिंदी पुस्तकालय (दो मंजिल), २३. मारवाड़ी दातव्य औषधालय (होम्योपैथी), २४. शिशुभारती नामक अंग्रेजी बाल विद्यालय हेतु श्री मोहनलाल बाँयवाला द्वारा दो बीघा भूमि दान, २५. देरगाँव के लुकुमोय में उच्च विद्यालय हेतु श्रीजयनारायण काबरा द्वारा दो बीघा भूमि दान, २६. देरगाँव के रांगामाटी में मंदिर हेतु स्व. गणपतलाल काबरा द्वारा एक बीघा भूमि दान, २७. मारवाड़ी युवा मंच संगठन द्वारा समाज सेवा, २८. मारवाड़ी संमेलन की देरगाँव शाखा संचालित, २९. माहेश्वरी सभी की देरगाँव शाखा संचालित।

मणिपुर (इम्फाल) :

१. चिकित्सा आवास भवन, २. भगवानलाल पाटनी चिकित्सा आवास भवन (मणिपुर मेडिकल कालेज के पास), ३. मारवाड़ी धर्मशाला।

कानपुर :

१.राधाकृष्ण मन्दिर, कमला नगर, २. कमलेश्वर मन्दिर, परमट, ३. द्वारिकाधीश मन्दिर, कमला नगर, ४. लाला लक्ष्मीपत सिंघानिया इन्स्टीट्यूट ऑफ कार्डियोलाजी, गुरैया, ५. लाला कैलाशपत सिंघानिया इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिसीन, मोतीझील, ६. लाला कमलपत मेमोरियल हास्पिटल, बिरहाना रोड, ७. जुहारी देवी कन्या महाविद्यालय, केनाल रोड, ८. जी.एन.के. इण्टर कालेज, सिविल लाइंस, ९. सर पद्मपत सिंघानिया एजुकेशन सेण्टर, १०. श्री मारवाड़ी पुस्तकालय तथा वाचनालय, बिरहाना रोड, ११. जे.के. इंस्टीट्यूट ऑफ कैंसर रिसर्च।

भागलपुर :

१. मारवाड़ी महाविद्यालय, २. यतिन्द्र नारायण आयुर्वेद महाविद्यालय, ३. मारवाड़ी पाठशाला, ४. बाल सुबोधिनी पाठशाला, ५. मारवाड़ी कन्या पाठशाला, ६. भजनाश्रम पाठशाला, ७. सरस्वती विद्या– शिशु मन्दिर, नाथनगर, ८. शारदा देवी झुनझुनवाला महाविद्यालय, ९. सरस्वती विद्या मन्दिर, १०. हनुमान विद्यालय, ११. रावतमल छात्रावास, १२.मोती मातृ सेवा सदन, १३. रुक्मिणी मातृ सेवा सदन, १४. जगदीश बुधिया नेत्र चिकित्सालय, १५. श्रीमती मन्नी बाई पोद्दार नेत्र चिकित्सालय, १६. जैन चिकित्सालय, १७. साह चिकित्सालय, १८. आनन्द चिकित्सालय, १९. महिला धर्म संघ, २०. सत्संग भवन, २१. स्व. देवी प्रसाद ढंढानिया धर्मशाला, २२. दिलसुख राम धर्मशाला, २३. डोकानिया धर्मशाला, २४. कमला कानोड़िया धर्मशाला, २५. टिबड़ेवाल धर्मशाला, २६. राणीसती धर्मशाला, २७. मारवाड़ी मण्डल धर्मशाला, २८. साह चौरिटेबुल ट्रस्ट, २९. जैन धर्मशाला (श्वेताम्बर), ३०. जैन धर्मशाला (दिगम्बर), ३१. अग्रसेन भवन धर्मशाला, ३२. जिलोका धर्मशाला, ३३. गोशाला, ३४. मारवाड़ी सुधार समिति, ३५. मारवाड़ी व्यायामशाला, ३६. ज्ञानदीप (शैक्षणिक संस्थान)।

बिहार में मारवाड़ी समाज द्वारा स्थापित महाविद्यालय

१. मारवाड़ी कालेज, किशनगंज, २. फारबिसगंज कालेज, ३. मोहन लाल जिलोका मेमोरियल कालेज, कटिहार, ४. टाटा कालेज, चाईबासा, ५. महिला कालेज, चाईबासा, ६. राजस्थान बिहार मन्दिर रात्रि कामर्स कालेज, गया, ७. ज्ञान चन्द जैन कामर्स कालेज, चाईबासा, ८. महिला महाविद्यालय, झरिया, ९. मारवाड़ी कालेज, दरभंगा, १०. जे.जे. कालेज, हजारीबाग, ११. चतरा कालेज, १२. झुमरीतलैया कालेज, १३. रामगढ़ कालेज, १४. एस. आर. के. गोयनका कालेज, सीतामढ़ी, १५. भरतिया महिला कालेज, पटना सिटी, १६. राम निरंजन दास संस्कृत महाविद्यालय, पटना

मारवाड़ी समाज की धरोहर

सिटी, १७. एस. पी. जैन कालेज, सासाराम, १८. मारवाड़ी संस्कृत महाविद्यालय, मझौलिया, १९.मारवाड़ी संस्कृत महाविद्यालय, छपरा, २०. मझौलिया संस्कृत महाविद्यालय, मझौलिया, २१. गया कालेज (गोपीराम डालमिया), गया, २२. गिरीडीह कालेज (चान्दमल जी राजगढ़िया), गिरीडीह, २३. सहरसा कालेज (शंकर प्रसाद टेकरीवाल परिवार), सहरसा, २४.धरान मोरान नेपाल महाविद्यालय, नेपाल।

आन्ध्र प्रदेश (हैदराबाद) :

१. मारवाड़ी हिन्दी पुस्तकालय, हश्मतगंज, २. मारवाड़ी हिन्दी पुस्तकालय, हश्मतगंज, ३. मारवाड़ी हिन्दी पुस्तकालय, सिकन्दराबाद, ४. मारवाड़ी हिन्दी पुस्तकालय, कसार हट्टा, ५. राजस्थानी विद्यार्थी गृह, हैदराबाद, ६. राजा बहादुर सर बंसीलाल मोतीलाल हॉस्पीटल, हैदराबाद, ७. श्री जैन पुस्तकालय–वाचनालय, सिकन्दराबाद, ८. सुख भवन, चारकमान, ९. राम भवन, घांसी बाजार, १०. हरि भवन, काली कमान, ११. भानमल लूणिया धर्मशाला, हनुमान टेड़ी, १२. श्री महावीर जैन छात्रालय, हनुमान टेड़ी, १३. अग्रवाल सेवा समिति, गांधी नगर, १४. राम प्रताप कन्हैयालाल पित्ती धर्मशाला, १५. जगदीश कन्या पाठशाला, महबूबगंज, १६. राजाबहादुर सर बंसीलाल बालिका विद्यालय, १७. गुरुकुल घटकेश्वर (पुस्तकालय, गोशाला), १८. सनातन धर्मशाला, बेगम बाजार, १९. मारवाड़ी हिन्दी विद्यालय, बेगम बाजार, २०. ज्ञान प्रकाश पुस्तकालय, उर्दू शरीफ, २१. एस.एस.जैन विद्यालय, सिकन्दराबाद, २२. शांतिलाल जैन के. जी. एण्ड प्राइमरी स्कूल, २३. वैदिक वाचनालय, गांधी नगर, २४. मदन भवन, चारकमान, २५. पूनमचन्द गांधी जैन धर्मशाला, काचीमुड़ा स्टेशन, २६. बंसीलाल भवन, आफजलगंज, २७. महावीर जैन पुस्तकालय, हबीरपुरा, २८. बाल विद्या मन्दिर, शमशेर गंज, २९. घासीलाल तोपनीवाल भवन, शमशेरगंज, ३०. श्री अम्बा सदन, गोविन्दवाड़ी, ३१. शिव भवन, चारकमान, ३२. शिवनाथ दरक स्मारक विद्यालय, दारुलशफा, ३३. श्री माहेश्वरी भवन, बेगम बाजार, ३४. श्री सिखपाल सेवा संघ भवन, फीलखाना, ३५. राम गोपाल बाहेती भवन, सिद्धि अम्बर बाजार, ३६. लक्ष्मी बाल पुस्तकालय, चारकमान, ३७. साधना मन्दिर, बोलाराम, ३८. शिवदत्त राय हाई स्कूल, लाड़ बाजार, ३९. अग्रवाल सभा भवन, सिद्ध अम्बर बाजार, ४०. जगदीश भवन, गांधी नगर, ४१. अग्रसेन वाचनालाय, सिद्ध अम्बर बाजार, ४२. राजस्थानी नवयुवक मण्डल पुस्तकालय, कबूतरखाना, ४३. रुपचन्द मेघाज कोचर भवन, ४४. जैन भवन, महाराजगंज, ४५. राजस्थान भवन ट्रस्ट, ४६. श्री पद्मश्री नैनसी भवन ट्रस्ट, ४७. श्री रामनाथ आश्रम ट्रस्ट, ४८. हरि प्रसाद स्मारक अस्पताल, पत्थर गट्टी, ४९. गोपीकृष्ण मलाणी भवन ट्रस्ट, ५०. राजस्थानी हिन्दी पुस्तकालय, बेगम बाजार, ५१. बद्रुका वाणिज्य एवं कला महाविद्यालय, ५२. अमृत कपाड़िया नवजी वन वीमेन्स कालेज, ५३. चाचा नेहरु बाल केन्द्र एवं फिल्म सेन्टर, ५४. शिशु सुरक्षा केन्द्र, ५५. नवजीवन बालिका विद्यालय, ५६. श्री कृष्ण मोरक्षिणी सभा (गोशाला), ५७. अग्रवाल शिक्षा समिति भवन, ५८. शंकर लाल धनराज सिंगनोदिया महिला कला।

महाविद्यालय, पत्थरागट्टी :

५९. श्री सत्यनारायण मन्दिर, गुंटुर, ६०. श्री महावीर जैन विद्यालय व स्थानक, गोशाला, ६१. अग्रवाल शिक्षा समिति के अन्तर्गत चलने वाले संस्थान, १. अग्रवाल हाई स्कूल, २. अग्रवाल जूनियर कालेज, ३. अग्रवाल बालिका विद्यालय हाई स्कूल, ४. अग्रवाल बालिका जूनियर कालेज, ५. नानकराम भगवानदास विज्ञान महाविद्यालय, ६. अग्रवाल विज्ञान एवं वाणिज्य सायंकालीन महाविद्यालय, ६२. श्रीराम हिन्दी भवन (हैदराबाद हिन्दी प्रचार सभा), ६३. श्री वेंकटेश्वर मन्दिर भवन, चारकमान, ६४. हरिचरण मारवाड़ी हिन्दी विद्यालय, निजामाबाद, ६५. राजस्थानी भवन, निजामाबाद, ६६. श्रीमती अशरफ देवी अग्रवाल जूनियर महाविद्यालय, निजामाबाद, ६७. श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिर, मंचरियाल, ६८. पन्नालाल हीरालाल हिन्दी विद्यालय, बीदर, ६९. राजस्थान सेवा भवन, सिरपुर–कागजनगर, ७०. राजस्थानी विद्यार्थी गृह, नान्देड़, औरंगाबाद, विजयवाड़ा, ७१. मारवाड़ी पंचायत भवन (धर्मशाला), आदिलाबाद, ७२. राष्ट्रभाषा हिन्दी विद्यालय, मंचरियाल, ७३. श्री मारवाड़ी राजस्थान शिक्षण संस्था, लातूर के अन्तर्गत।

चलने वाले शिक्षण संस्थान :

१. श्री मारवाड़ी राजस्थान बहुउद्देशीय विद्यालय, २. श्री गोदावरी देवी लाहोटी कन्या विद्यालय–दो शाखाएं, ३. श्री सूरजमल लाहोटी पाठशाला, ४. एस.टी.सी. इन्स्टीट्यूट ७४. मारवाड़ी युवक वाचनालय, लातूर, ७५. जालना एजुकेशन सोसायटी, जालना के अन्तर्गत चलने वाली।

संस्थायें :

१. आर.जी. बगड़िया आर्ट्स कालेज, २. एस.वी. लाखोटिया कामर्स कालेज, ३. आर. वंसजी साइन्स कालेज एवं ४. श्रीमती राम प्यारी बाई बंसीलाल जी लाखोटिया डिपार्टमेंट ऑफ पोस्ट ग्रेज्युएट टीचिंग संस्थान, ७६. राष्ट्रीय हिन्दी विद्यालय, जालना, ७७. श्रीमती दान कंवर देवी कन्या विद्यालय हाई स्कूल, जालना, ७८. महावीर स्थानक वासी जैन विद्यालय, जालना, ७९. हिन्दी प्राथमिक पाठशाला, बारंगल, ८०. राजस्थानी सेवा समाज भवन, सिरपुर कागजनगर, ८१. हनुमान मन्दिर, आदिलाबाद, जलगांव, पेट्टापल्ली, ८२. राजस्थानी रिलीफ सोसायटी, रामावरम।

– ; सूची में सुधार हेतु लिखें :–

शम्भु चौधरी, एफ.डी. 453, साल्टलेक सिटी, कलकत्ता–700106

उपरोक्त सूची समाज द्वारा किए कुल कार्य का पांच प्रतिशत भी नहीं है, इस ऐतिहासिक संलग्न कार्य में भाग लेवें।– सम्पादक

मारवाड़ी अस्पताल 'वाराणसी'

- गौरी शंकर नेवर, संयुक्त मंत्री

आज से ९० वर्ष पूर्व सन् १९१६ में कोलकाता के कानोड़िया परिवार द्वारा मारवाड़ी अस्पताल का शिलान्यास व उद्घाटन तत्कालीन गर्वनर सर जेम्स वेस्टन ने १२ अगस्त १९१६ को किया गया। अस्पताल के लिए स्थान का चयन बड़ी दूरदर्शिता से काशी आने वाले पर्यटक एवं यात्रियों का मुख्य आकर्षण माँ गंगा का दर्शन एवं स्नान तथा बाबा भोलेनाथ का दर्शनपूजन को ध्यान में रख कर किया गया। काशी शहर में व्यस्ततम चौराहे गोदौलिया पर स्थित अस्पताल माँ गंगा व भोलेनाथ से पाँच मिनट की दूरी पर है। संस्थापकों की ऐसी मान्यता थी कि अगर मर्ज है तो उसका इलाज भी है। निदान विधि भिन्न हो सकती है। अत: ऐलोपैथी के साथ–साथ आयुर्वेद विभाग की स्थापना सन् १९२१ में की गई तत्पश्चात् १९३६ में होम्योपैथी विभाग की स्थापना की गई। मरीजों को शुद्ध एवं प्रमाणिक आयुर्वेदिक दवा प्राप्त हो इसके उद्देश्य से निर्माण शाला की स्थापना की गई। जिसमें योग्य वैद्यों की निगरानी में शत् प्रतिशत शुद्ध दवाओं का निर्माण होता है। अत: यहाँ मर्ज ठीक करने वाली तीनों विधाएँ उपलब्ध हैं।

अस्पताल में प्रात: दूध एवं बिस्कुट तथा दोपहर एवं शाम को पवित्रता से बना हुआ सुपाच्य गरम भोजन ही रोगियों को नि:शुल्क दिया जाता है और साथियों को मात्र १०/– रुपये में।

इस चिकित्सा संस्थान ने आजादी के पहले स्वंत्रता संग्राम सेनानियों की निर्भीकता से चिकित्सा सेवा की जबकि उनकी चिकित्सा करना अंग्रेजों की नजर में अपराध माना जाता था।

भारत के प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने १९६४ में अस्पताल के महिला एवं बाल चिकित्सा विभाग का उद्घाटन किया एवं विभिन्न अवसरों पर देश के शीर्ष नेतागण डॉ. सम्पूर्णानन्द, डॉ. रघुनाथ सिंह, श्री श्रीप्रकाश जी, श्री मोहन लाल सुखाड़िया, श्री दाऊदयाल खन्न, श्री चन्द्रभान गुप्ता आदि ने अस्पताल में पधार कर इसके विकास में अमूल्य योगदान किया। पं. कमलापति त्रिपाठी जी का उपाध्यक्ष के रूप में अन्तिम सांस तक अस्पताल के उत्थान में पूरा मार्गदर्शन एवं योगदान मिला। सेवा क्षेत्र में नये आयामों को प्राप्त करते हुए अपनी लम्बी सेवा अवधि में अस्पताल काफी उतार–चढ़ाव देखा फलस्वरूप संस्थापकों ने अस्पताल में नया संचार प्रदान करने हेतु नये ट्रस्ट बोर्ड एवं प्रबन्ध समिति गठन किया गया।◆

महाराजा अग्रसेन इन्टर कॉलेज, झरिया

विगत कई वर्षों से दशम उत्तीर्ण छात्राओं एवं इनके अभिभावकों के समक्ष एकादश में नामांकन की समस्या दिन–प्रतिदिन विकराल रूप धारण करती जा रही है। झरिया मारवाड़ी सम्मेलन ट्रस्ट द्वारा संचालित महिला महाविद्यालय की स्थापना के उपरान्त बालिकाओं एवं इनके अभिभावकों को बहुत बड़ी राहत मिली। इस विद्यालय में एकादश (इन्टर) से स्नातक तक केवल दो संकायों (वाणिज्य एवं कला) में ही एकमात्र छात्राओं के लिए ही शिक्षा की व्यवस्था है। विगत कई वर्षों से इस महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं को अन्य कॉलेजों से परीक्षा का फार्म भराये जाने के कारण तरह तरह की परेशानी हो रही थी। चूंकि इस महाविद्यालय की प्रबंध समिति द्वारा किसी बोर्ड अथवा विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त करने की दिशा में कोई ठोस पहल नहीं की जा रही थी। किन्तु छात्रों के समक्ष इस प्रकार की शिक्षण संस्था का अभाव काफी खल रहा था, जहाँ महिला महाविद्यालय की भांति ही अन्य कोई दूसरा शिक्षण संस्थान विकल्प के रूप में हो, जहां छात्र भी दशम उत्तीर्णता के पश्चात छात्राओं की भांति ही एकादश में अपना नामांकन करा सकें। इन सारे बिन्दुओं पर गंभीरता पूर्वक विचार करते हुए झरिया मारवाड़ी सम्मेलन ट्रस्ट कार्यसमिति के सदस्य सह बालिका मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल द्वारा इस अहम मुद्धे को सम्मेलन कार्य समिति की बैठक में उठाते हुए अपने इस ट्रस्ट के अन्तर्गत यथाशीघ्र एक ऐसे शिक्षण संस्थान की स्थापना पर जोर दिया जहां छात्र–छात्राओं को एकादश में मामांकना कराने में किसी प्रकार की परेशानी का सामना नहीं करना पड़े तथा उक्त शिक्षण संस्थान में तीनों संकायों (वाणिज्य, कला एवं विज्ञान) की पढ़ाई की समुचित व्यवस्था हो। विद्यालय प्रबंध समिति ने १४.१२.२००४ को झारखण्ड एकेडमिक कौंसिल, रांची से महाराजा अग्रसेन इन्टर कॉलेज के नाम से मान्यता प्राप्त करने की दिशा में आवश्यक प्रक्रियायें पूर्ण कर लेने के पश्चात उक्त कौंसिल कार्यालय रांची में आवेदन समर्पित कर दिया।

इस महाविद्यालय की स्थापना से झरिया मारवाड़ी सम्मेलन ट्रस्ट के इतिहास में एक नई लोकप्रिय शिक्षण संस्थान का नाम जुड़ जाने से सामाजिक एवं शिक्षा के क्षेत्र में सम्मेलन की बढ़ती हुई लोकप्रियता एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई है। यह समाज एवं सम्मेलन के लिए गौरव की बात है। इस कॉलेज के प्रारंभ किये जाने में कोलफिल्ड कॉलेज भागा के प्रोफेसर माननीय पी० के० गजरे का अहम योगदान रहा है, जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है। प्रारंभ से ही इनका कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन इस कॉलेज को प्राप्त होता रहा है।◆

मारवाड़ी समाज की धरोहर

श्री माहेश्वरी विद्यालय, कोलकाता

लगभग ८५ वर्ष पूर्व की बात है। वे शताब्दी की तरुणाई के दिन थे। सामाजिक जागरण के लिये बहुमुखी रचनात्मक कार्यों को संपन्न करने के लिए यत्र तत्र ऐसे धरातल निर्मित किये जा रहे थे, जहां आत्मविश्वास जी सके, आस्था पनप सके और स्वप्न फल फूल सके। इस दिशा में प्रयास करने वाले लोगों में माहेश्वरी जाति के कर्मठ पुरुष भी थे। जागृति की इसी भावना से बंगाल में सन् १९१४ में माहेश्वरी सभा को प्रगति के नये आयाम देने का गुरुतर दायित्व रामकृष्णजी मोहता ने ग्रहण किया। उनमें माहेश्वरी जाति को शिखर पर देखने की महत्वाकांक्षा थी। एक बैठक में जब पुस्तकालय विषयक विचार विमर्श चल रहा था, उन्होंने प्रसंगवश एक बात प्रभावशाली तरीके से कही कि पहले पढ़ना तो सीख लें। ये गिने चुने शब्द उनकी वाणी से जिस कटु सत्य को लेकर प्रकट हुए। उससे उपस्थित जनों को गहन चिन्तन का विषय मिला। यह सत्य नकारने योग्य नहीं था। शिक्षा के लिए चाहिए विद्यालय और विद्यालय के लिए चाहिए साधन स्थान सहयोग और अटूट संकल्प मोहताजी ने अपने विचारों को सबसे पहले सभा के कर्मठ कर्णधार जुगल किशोरीजी बिड़ला के सामने रखा। उन्होंने भी इसका समर्थन किया परिणाम स्वरूप २४ मार्च १९१६ ई. को सभा की एक बैठक बुलाई गयी, जिसमें विद्यालय की स्थापना का संकल्प विधिवत प्रस्ताव रूप में स्वीकृत किया गया। ५ मई १९१६ को इसी अक्षय तृतीया के दिन रामानुज संप्रदाय के आचार्य व कांचीवरम् के पीठाधीश्वर श्रीमद अनताचार्य जी महाराज ने अपराह्न एक बजे गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में जगद्गुरू ने श्री माहेश्वरी विद्यालय को अपने आशीषों से अभिसिक्त करके उसका उद्घाटन किया।

१८ फरवरी १९२६ को कलकता विश्वविद्यालय से पुनःहाई स्कूल की मान्यता प्राप्त की गयी। अब स्थिति यह थी कि प्रतिवर्ष अनेक छात्रों को स्थानाभाव के कारण प्रवेश पाने से वंचित रहना पड़ता था। कार्यकर्तागण इस विषय में चिंतित थे। १९५० तक विद्यालय में उन्नीस सौ छात्र हो गये थे।

१९५० के बाद एक नया दौर प्रारंभ हुआ। हाई स्कूल की परिपाटी समाप्त करके माध्यमिक शिक्षा के महत्व को प्रतिपादित किया जाने लगा। मुदालियर आयोग ने सिफारिश की कि इंटरमीडिएट शिक्षा समाप्त की जाये और उसे ऐंट्रेंस के साथ मिश्रित किया जाये एवं उसे उच्चतर माध्यमिक परीक्षा का नाम दिया जाये। परिणामस्वरूप जनवरी १९५५ में हिन्दी भाषी विद्यालयों में श्री माहेश्वरी विद्यालय को ही प्रथम बहुदेशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय घोषित किया गया। यह निश्चय ही एक बड़ी उपलब्धि थी। विद्यालय की प्रबंध समिति ने सन् १९५७ ई. में विज्ञान विभाग के लिए सामग्री खरीदी जिसमें बहुमूल्य उपकरण भी थे। इन विगत वर्षों में छात्रों की क्रमशः बढ़ती हुई संख्या पर नजर डालें तो विद्यालय की लोकप्रियता, उसकी उच्चस्तरीय शिक्षा और प्रगति का अनुमान लगाने में कोई कठिनाई नहीं होगी। सन् १९१६ में मात्र पच्चीस छात्रों से शुरू होने वाली इस विद्यालय में पहली कक्षा से बारहवीं तक के लगभग पांच हजार छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं एवं १२० शिक्षक शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

श्री माहेश्वरी विद्यालय न केवल पश्चिम बंगाल के हिन्दी भाषी विद्यालयों के सर्वोच्च आदर्शों का अपितु माहेश्वरी समाज की आदर्श संस्था माहेश्वरी सभा, कोलकाता के भी सर्वोच्च आदर्श का सफल प्रतिनिधित्व करता है। माहेश्वरी समाज द्वारा प्रतिष्ठित इस विद्यालय की अपने स्थापना काल से ही ऐतिहासिक एवं विशिष्ट परंपराएं रही हैं, जो उत्तरोत्तर विकसित होकर निखरती गयी हैं।◆

टांटिया हाईस्कूल

कोलकाता के हिन्दी भाषी जगत में अच्छे स्कूलों का अभाव रहा है, दो सैयद अली स्ट्रीट, कोलकाता–७३ में स्थित टांटिया हाईस्कूल ने इस अभाव को दूर करने की एक ईमानदार कोशिश की है। सन् १९५३ में बसंत पंचमी के दिन पश्चिम बंगाल के राज्यपाल डॉ. हरेन्द्र नाथ मुखर्जी ने इस स्कूल का शिलान्यास किया था। डॉ. मुखर्जी स्वयं एक शिक्षक थे। उनका जीवन संत व ऋषि जैसा था। पुण्यात्मा के हाथों स्कूल का शिलान्यास होना स्कूल के लिए शुभ होना था। स्कूल अनवरत उन्नति करता चला आया है।

एक वर्ष बाद जनवरी १९५४ में ५०० छात्रों को लेकर स्कूल बाकायदा खुल गया। आज ४७ वर्ष बाद छात्रों की संख्या तिगुनी से भी अधिक लगभग १८०० और अध्यापक–अध्यापिकाओं की संख्या ६१ हो गयी है।

टांटिया स्कूल की सफलता की एक कसौटी यह मानी जा सकती है। पश्चिम बंगाल बोर्ड की माध्यमिक परीक्षाओं में उसके छात्रों का परीक्षाफल कैसा रहा है। पिछले ५० वर्षों से स्कूल का परीक्षाफल ९५ प्रतिशत से कभी कम नहीं रहा और हाल के दस वर्षों में तो यह शत प्रतिशत की सीमा तक पहुंच गया है। यही नहीं जो छात्र उत्तीर्ण हुए हैं उनमें से ६० प्रतिशत तक प्रथम श्रेणी में और बाकी द्वितीय श्रेणी में तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों की संख्या नगण्य है।◆

मारवाड़ी समाज की धरोहर

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी

227, रविन्द्र सरणी, कोलकाता - 700007, स्थित पांच तल्ला भवन

उन्नीसवीं सदी में उद्योग व्यापार में मारवाड़ियों का वर्चस्व बंगाल और खासकर कलकत्ता महानगर में कायम होने लगा। व्यापार उद्योग में अद्वितीय सफलता प्राप्त करने के साथ ही साथ उपार्जन और विसर्जन का अर्थात् परहित में धन का कुछ अंश लगाना अनिवार्य मानते थे एवं अपने जन्म स्थान में ही नहीं बल्कि अपने उद्योग व्यापार के क्षेत्र में भी अनेकों धर्मशालायें, स्कूल, कालेज एवं अस्पताल आदि का निर्माण किया। मारवाड़ी समाज में सार्वजनिक उपयोग की अनेकों संस्थायें कायम की उन्हीं एक कड़ियों में है मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी जिसका विकास क्रम विशाल वट वृक्ष की तरह उन्मुख होकर आज सेवा के विभिन्न आयामों की भूमिका में सन्निहित है। कलकत्ते के बड़ाबाजार अंचल में एक ऐसी घटना घटी कि मारवाड़ी सहायता समिति (जो बाद मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी बनी) की स्थापना का अवसर उपस्थित हो गया। कलकत्ते के बड़ाबाजार जन स्कूल क्षेत्र में एक व्यक्ति मकान से गिर पड़ा और उसे सांघातिक चोट लगी। कुछ व्यक्ति उस घायल व्यक्ति को लेकर चिकित्सा हेतु कई अस्पतालों में भटकते रहे, पर उसकी समुचित चिकित्सा की व्यवस्था नहीं हो पायी। उसी क्षण मन में एक विचार आया कि इस अंचल में एक अस्पताल की व्यवस्था होनी चाहिये जिससे भविष्य में इस प्रकार आकस्मिक दुर्घटनाओं के शिकार व्यक्तियों को भटकना न पड़े। इस कार्य को साकार रुप देने के लिये २ मार्च १९१३ को काटन स्ट्रीट स्थित जोड़ा कोठी की एक बैठक में जुगल किशोर बिड़ला, ओंकारमल सराफ, हरखचन्द मोहता के प्रयास से मारवाड़ी सहायता समिति नामक संस्था की स्थापना की। इस संस्था

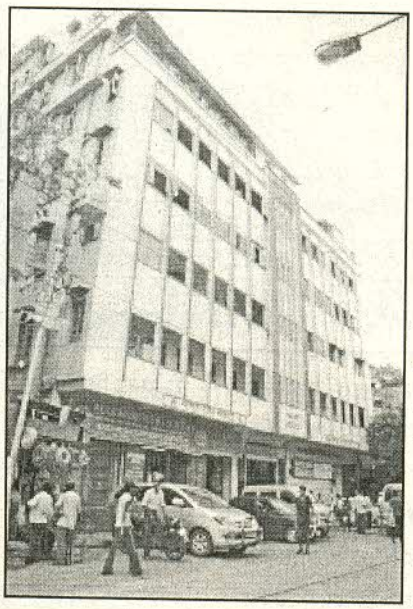

के प्रथम अध्यक्ष बने जुगल किशोर बिड़ला एवं प्रथम मंत्री बने ओंकारमल सराफ। इस संस्था का उद्देश्य सहायता करना एवं जन साधारण की सेवा करना रखा गया। अंग्रेजों के शासन काल में मारवाड़ी सहायक समिति के अधिकांश कार्यकर्त्ता ब्रिटिश सरकार के कोपभाजन बन गए। वे या तो नजरबंद हो गये या उन्हें कलकत्ते से निष्कासित कर दिया गया।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी अस्पताल (रानीगंज), मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी (कोलकाता) की एक शाखा है। रानीगंज शहर में अस्पताल की स्थापना की कल्पना जगन्नाथ झुनझुनवाला चैरिटी ट्रस्ट के तात्कालिक पदाधिकारियों ने की थी, जिन्होंने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए तात्कालीन ट्रस्ट की चल व अचल सम्पत्ति को सोसाइटी के नाम स्तानांतरित कर दिया। इस कल्पना को साकार रुप देने का श्रेय मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी (कलकत्ता) को है। प्रारम्भिक योजना के सहयोगी स्व० जगन्नाथ बेरीवाल, स्व.नन्दलाल जालान, बनवारी लाल भालोटिया, श्री गोवर्द्धनलाल झुनझुनवाला, श्री चिरंजीलाल केजरीवाल, श्री गोविन्दराम खेतान, श्री जे.एन.गुप्ता एवं स्व. भानु प्रसाद खेतान के नाम विशेष उल्लेखनीय है।

रानीगंज अस्पताल की आधारशीला, दिनांक २८ मार्च १९६१ को डॉ. विधानचन्द्र राय ने रखी। अस्पताल भवन का निर्माण कार्य दिनांक २ अगस्त १९६१ से सक्रिय रुप से चालू कर दिया गया जो १९६३ तक निरन्तर चलता रहा एवं अप्रैल १९६४ में अस्पताल जनता की सेवा के लिये खोल दिया गया। इस अस्पताल का विधिवत उद्घाटन २३ मार्च १९६८ को श्री कृष्ण कुमार बिड़ला ने किया।◆

श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल

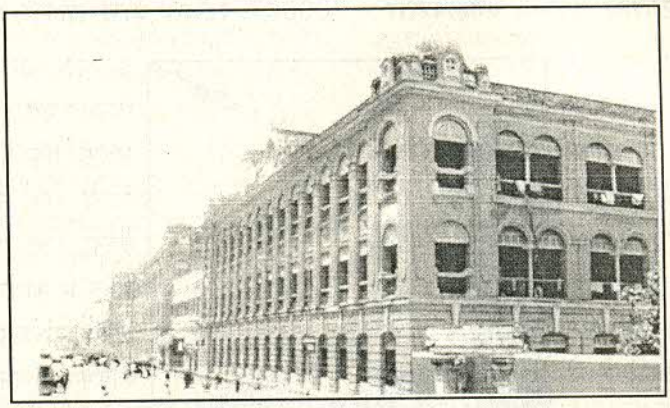

स्वामी श्री विशुद्धानन्द सरस्वतीजी महाराज की प्रेरणा सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की भावना से प्रेरित होकर हमारे पूर्वजों ने सन् १९१९ में इस अस्पताल की स्थापना की। इस अस्पताल के संस्थापक थे स्व० जुहारमलजी खेमका, स्व० रामजीदासजी बाजोरिया, स्व० रामेश्वर दासजी दुदवेवाला, स्व० केशोरामजी पोद्दार, एवं चिमनलालजी गनेरीवाल। इन लोगों ने समाज के सभी वर्गों से सहयोग लेकर इस अस्पताल का निर्माण किया। सहयोग दाताओं की सूची आज भी अस्पताल में सूचनापट्ट पर अंकित है। उस वक्त अंग्रेजों के शासनकाल में कलकत्ते के बड़े अस्पतालों में श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल एक था। यह अस्पताल ११८, अम्हर्स्ट स्ट्रीट (वर्तमान में राजा राममोहन राय सरणी) में करीबन ३ एकड़ जमीन पर स्थित है। इसके उत्तर भाग में केबिन एवं दवा विभाग, पश्चिम भाग में वातानुकूलित केबिन, रसायन, मलमूत्र परिक्षण विभाग, एवं मन्दिर तथा मध्य भाग में प्रशासनिक एवं अन्य समूचे विभाग अवस्थित है। इस अस्पताल में करीबन २०० रोगियों के इन्डोर इलाज की व्यवस्था है। इसके वार्ड में जितने खुले एवं हवादार कमरों की व्यवस्था है उतनी कलकत्ते के और अस्पतालों में नहीं है। जब से इस अस्पताल की स्थापना हुई तबसे स्व० रामजीदासजी बाजोरिया, स्व० केदारनाथजी पोद्दार नित्यप्रति रोगियों के समक्ष जाकर उनकी सुख सुविधाओं का ध्यान रखते थे, तत्पश्चात श्री पुरुषोत्तमजी पोद्दार एवं स्व० पुरुषोत्तमजी हलवासिया ने यह भार संम्भाला एवं नित्यप्रति सेवा भाव से समर्पित होकर रोगियों के समक्ष जाने लगे। कतिपय कारणों की वजह से यह अस्पताल सन् १९८१ से सन् १९८३ तक बन्द रहा एवं तत्पश्चात् स्व० पुरुषोत्तमदासजी हलवासिया के प्रसर प्रयत्नों से यह अस्पताल पुनः चालू हुआ जिसमें स्व० सत्यनारायणजी टांटिया अध्यक्ष एवं स्व० पुरुषोत्मजी हलवासिया मंत्री बने एवं यह अस्पताल सुचारु रुप से चलने लगा।

वर्तमान में इस अस्पताल के उत्तरी भाग में एक तिमंजिला बिल्डिग है जिसमें प्रथम मंजिल में २० साधारण केबिन है। द्वितीय मंजिल में २० स्पेशल केबिन है एवं तृतीय मंजिल में डिलक्स वातानुकूलित केबिन २० है। अस्पताल के मध्य भाग में आउट डोर विभाग है जिसके अर्न्तगत सर्जीकल, मेडिकल, कैंसर, ओर्थोपेडिक, महिला चिकित्सा, डायविटिज कार्डियोलोजी, शिशु चिकित्सा, होमियोलोजी, आयुर्वेदिक एवं परिवार नियोजन विभाग है। इस आउट डोर विभाग में ८० से ऊपर डॉक्टर नित्यप्रति बैठते हैं। इसके प्रथम तल्ले पर पूर्ण आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति एवं यंत्रों से लैस ३ आपरेशन थियेटर है जिसमें एक ही समय में एक साथ ३ आपरेशन किया जाता है। साथ ही २५ बेडों से युक्त खुला हवादार सर्जीकल पुरुष वार्ड है एवं संलग्न २५ बेडों का मेडिकल पुरुष वार्ड भी है। इसी प्रथम तल्ले के पश्चिम भाग आई टी यु युनिट (इन्टेनसीन थेरेपी युनिट) अवस्थित जिसमें १० बेड हैं एवं आधुनिक यन्त्रों से लैस है तथा सम्पूर्ण वातानुकूलित है। इसके दूसरी मंज़िल पर २५ बेडों का महिला सर्जीकल वार्ड एवं २५ बेडों का महिला मेडिकल वार्ड है। भवन के मध्य भाग में फूलों से लैस एक लान भी है। पश्चिमी भाग में रायबहादुर हजारीमल दुदवेवाला की धर्मपत्नी द्वारा निर्मित सत्यनारायण भगवान मन्दिर है, एवं शिव मन्दिर जहां सुबह एवं सायंकाल नित्यप्रति पूजा होती है। मंदिर के संलग्न रसायन विभाग है। यहां पर आयुर्वेदिक पद्धतियों के द्वारा शुद्ध आयुर्वेदिक दवाओं का निर्माण सुदक्ष निरीक्षकों की देखरेख में किया जाता है।◆

श्री मारवाड़ी दातव्य औषधालय, गुवाहाटी

प्राकृतिक सौंदर्य से सराबोर, माँ कामख्या के आगोश में बसे असम प्रदेश को सदियों पूर्व मारवाड़ी समाज ने अपनी संपर्क साधनों से विहीन एक अनजाने प्रदेश में अपने अथक श्रम, लगन के साथ न केवल स्वयं को स्थापित किया बल्कि प्रदेश को भी आर्थिक संबल प्रदान करने में सहयोग दिया। परोपकार, दानशीलता, और सेवाभाव मारवाड़ी समाज के वंशानुगत गुण रहे हैं, उन्हीं भावनाओं के परिणाम है आज सारे देश में मारवाड़ी समाज द्वारा स्थापित व संचालित अनगिनत संस्थायें कार्यरत है। श्री मारवाड़ी दातव्य औषधालय, गुवाहाटी (असम) उसी की एक कड़ी है श्री मारवाड़ी दातव्य औषधालय अपने जीवन के ९५ साल पूरे कर चुका है। इन ९ दशकों का एक गौरवशाली इतिहास भी है। इस संस्था ने जहां लाखों पीड़ित मानवों को न सिर्फ सेवा की, साथ ही साथ इस दीर्घ काल में समाज में अपनी एक पहचान भी कायम की है। जहां औषधालय ने समय के अनुसार अपनी सेवाओं का विस्तार किया वहीं समाज के सहयोग से दो नये हॉस्पिटल का निर्माण कर यह प्रमाणित भी कर दिखाया कि असम का मारवाड़ी समाज भी व्यवसाय के साथ सेवा के क्षेत्र में भी अपनी अग्रणी भूमिका निभाने में देश के अन्य भाग से किसी भी तरह कमजोर नहीं है।

औषधालय का इतिहास—यह औषधालय बंगला तारीख १ जेठ संवत् १९७३ साल में स्थापित किया गया था जिसमें स्व० नागरमलजी केजड़ीवाल, स्व० लक्ष्मीनारायणजी लोहिया व स्व० कामख्यालालजी सीकरिया जी के नामों का विशेष उल्लेख मिलता है। संस्था के संक्षिप्त इतिहास से पता चलता है कि संवत् १९७३ से लेकर संवत् १९७६ तक इस औषधालय का कार्य स्व० कामख्यालालजी सीकरिया जी के व्यापारिक स्थल से चलता रहा प्रारम्भ में इसका नाम श्री श्री कमक्षा भगवती दातव्य मारवाड़ी औषधालय का उल्लेख मिलता है।

इस क्षेत्र में अस्पताल की प्रतिष्ठा का अंदाज इस बात से ही लगाया जा सकता है कि केन्द्रीय सरकार के स्वास्थ और शिशु कल्याण विभाग द्वारा मारवाड़ी मेटरनिटी हॉस्पिटल को सर्वोत्तम शिशु मित्र के पुरस्कार से सम्मानित किया है। इस प्रसुतिगृह अस्पताल में शिशु मृत्युदर राष्ट्रीय औसत के समक्ष नगण्य ही नहीं, प्राय: शून्य ही माना जाएगा।

मारवाड़ी मेटरनिटी हॉस्पिटल की सफलता ने समाज के कई लोगों को प्रभावित किया। जिसका परिणाम रहा संस्था की एक ओर एक संतान। मारवाड़ी हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर स्व. हरिबक्स जी नन्दलाल जी खाकोलिया द्वारा प्रदत्त भूमि पर आज मारवाड़ी हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर स्थित है। पूर्व संयुक्तमंत्री श्री किशनलाल बीदासरिया ने इस भूदान हेतु एक सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया था। स्व. बेणी प्रसाद शर्मा एवं उनके कई सहयोगियों के नेतृत्व में उपरोक्त भूमि पर बहुमंजिला भवन के निर्माण की आधारशिला रखी गयी एवं निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया। तत्कालीन महामंत्री श्री लोकनाथ मोर, जो वर्तमान में संस्था के अध्यक्ष हैं का पूर्ण सहयोग रहा। इस निर्माण कार्य में चार वर्ष का समय लगा। श्री प्रमोद सराफ, श्री सज्जन जैन एवं अनेकों सहयोगियों के सहनेतृत्व में इस भवन के कार्यो को पूरा किया गया।◆

गुवाहाटी गोशाला असम का ऐतिहासिक धरोहर

गाय की महत्ता, उसकी सेवा से प्राप्त आशीर्वाद जीवन को सुखमय बनाते हैं। इन्ही सब बातों से प्रेरणा लेकर श्री गुवाहाटी गोशाला की स्थापना हुई थी। आज श्री गुवाहाटी गोशाला भारत की ऐतिहासिक गोशालाओं में आज भी सर्वोपरि है। गोशाला के वर्तमान मंत्री श्री जयप्रकाश गोयनका के अनुसार सन् १९१६ में स्थापित गुवाहाटी पिंजरापोल (वर्तमान में गुवाहाटी गोशाला) की स्थापना के लिये सबसे पहले यहाँ का अग्रवाल समाज आगे आया। भूमिदाताओं में सर्वश्री हुकमीचन्दजी, रामरिखदासजी अजितसरिया (गुवाहाटी), लालचन्दजी कन्हीरामजी चौधरी (कोलकाता), रामलालजी लालचन्दजी गोयनका (गुवाहाटी), हुकमीचन्दजी बशेशरलाल अजितसरिया (गुवाहाटी) प्रमुख थे। उपरोक्त कोलकाता वाले चौधरियों ने मालीगाँव गोशाला की जमीन दी थी यह जानकारी मुझे श्री पुरुषोत्तमजी अजितसरिया से प्राप्त हुई।

इस गोशाला में कुल छोटे—बड़े बछड़े गायें, सांड आदि मिलाकर १३६० गो वंश हैं। ३०० गऊएँ बीमार अपंग तथा बृहत गो वंशों की मालीगाँव गोशाला में गोशाला के निजी डाक्टर, तीन कम्पाउन्डरों द्वारा चिकित्सा सेवा भी की जाती है। गोशाला में दुधारु गायों द्वारा १३०० लीटर दूध उत्पादन होता है जो १/२—१/२ लीटर के कूपनों द्वारा छोटे—छोटे परिवारों में उचित मूल्य पर वितरित किया जाता है।

गोशाला की निजी **Water supply** तथा पावरफुल जेनेरेटिंग रूम है तथा खेड़—घास आदि लाने के लिये, गोबर ढोने के लिये निजी ट्रकें, ट्रेक्टर, ट्रेलर, गाड़ियाँ आदि हैं। यह सब पूर्ण व्यवस्थित रूप से कमिटि द्वारा संचालित होता है।◆

IISD

A Gateway to Careers

SREI Foundation

FOR GRADUATES
THE ULTIMATE PROFESSIONAL EDGE

MBA

BBA BCA

EXCELLENT OPPORTUNITY FOR MASTER DEGREE IN MANAGEMENT WHILE WORKING IN OWN CAREER.

CONVENIENT WEEKEND CLASSES AVAILABLE

Specialisations offered

- Marketing
- Finance
- Human Resource Management
- Information Technology

Other Major Courses Conducted By IISD

- Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit and Hindi.
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examination (Both Preliminary and Main).
- WBCS (Executive & Judicial) and Allied Services Examination (Prelims and Main).
- Company Secretary Courses (Foundation, Intermediate and Final).
- PG Medical Entrance including MD / MS, M.R.C.P., D.N.B., etc.

FACILITIES

- Most convenient and well-connected location in Salt Lake, next to the Easter Zonal Cultural Centre.
- AC Class Rooms.
- Eminent highly qualified and experienced faculty.
- Tutorials, personalized coaching, seminars and workshops.

Degree conferred by Punjab Technical University approved by UGC, Ministry of HRD, GoI, and DEC.

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata 700 106

Ph.: 2335 2378/2861, Fax: 2335 2379

E-Mail: info@iisdedu.in Website : www.iisdedu.in

मारवाड़ी समाज की धरोहर

बड़ाबाजार लाइब्रेरी

10-1-1, सैयद साली लेन, कोलकाता-700073

पं० केशवप्रसाद मिश्र ने सन् १९०० ई० में बड़ाबाजार लाइब्रेरी के नाम से कलकत्ता के हिन्दी भाषियों की प्रथम संस्था का बीजारोपण किया एवं इसके प्रथम मंत्री बने। इम्पीरियल लाइब्रेरी (अब नेशनल लाइब्रेरी) का जन्म तो इसके दो वर्ष बाद हुआ। बड़ाबाजार लाइब्रेरी की स्थापना में उस समय के साहित्यिक दिग्गज पण्डित प्रवर गोविन्द नारायण मिश्र, पं० छोटूलाल मिश्र, पं० दुर्गाप्रसाद मिश्र, लक्ष्मीनारायण बर्मन एवं पं० कालीप्रसाद तिवारी आदि का भरपूर सहयोग था। इसकी स्थापना के अवसर पर बंगाल के लेफ्टीनेंट गवर्नर सर जोहन वुड बने स्वयं उपस्थित हुए थे एवं हिन्दी प्रेमी बंगाली सर गुरदास बनर्जी एवं जस्टिस शारदा चरण मित्र इसकी साहित्यिक सभाओं में बराबर भाग लेते थे एवं हिन्दी को प्रोत्साहित करते रहते थे।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एवं महाकवि निराला का भी इस पुस्तकालय से घनिष्ट सम्बन्ध रहा। १९१२ ई० मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अखिल भारतीय अधिवेशन इसी के प्रयत्न से कोलकाता में हुआ।

आरंभ में इसकी स्थापना हरीसन रोड (अब महात्मा गांधी रोड) के पारख कोठी के पास के कटरे में की गई एवं कई स्थानों पर स्थानान्तरित होते हुए जब घनश्यामदासजी बिड़ला इसके संरक्षक बने तो उन्होंने अपनी बनाई ब्राह्मण बाड़ी (१०-१-१ सैयद साली लेन) का एक भाग पुस्तकालय को निःशुल्क प्रदान कर दिया और कुछ वर्ष पूर्व तो पूरा भवन ही इसे दे दिया है। आडी बांसतल्ला में लाइब्रेरी की शाखा हेतु भी बिड़ला परिवार ने ही काफी बड़ा स्थान इसे निःशुल्क प्रदान कर रखा है जहां विशेषत: उच्चस्तर शिक्षा के पाठ्यक्रम का केन्द्र चलता है।

विविध साहित्यिक गतिविधियों के साथ-साथ सी.ए. एवं कम्पनी सेक्रेटरी जैसे उच्चस्तर शिक्षा के कार्यक्रम तीन स्थानों पर संचालित हो रहे हैं। लगभग १५०० विद्यार्थी इसका लाभ उठा चुके हैं।

इधर के तीन दशकों में आचार्य विष्णुकान्त शास्त्रीजी का पूरा मार्ग दर्शन मिला। पांच वर्ष पूर्व उनके देहावासन के बाद उनकी स्मृति में लाइब्रेरी में एक सभागार भी स्थापित किया गया। पुस्तकालय के रजत, स्वर्ण, कौस्तुभ एवं शताब्दी समारोहों में देश के श्रेष्ठ विद्वान सम्मिलित हुए। समय-समय पर साहित्यिक एवं राष्ट्रीय चेतना के विषयों पर गोष्ठियां भी आयोजित की जाती हैं।

लाइब्रेरी में वर्तमान में २५ हजार के लगभग पुस्तकें हैं। इसके २६६ आजीवन, ५७० साधारण २३३ सहायक एवं ४००० के लगभग विद्यार्थी सदस्य हैं। इसका वाचनालय भी पत्र-पत्रिकाओं से समृद्ध हैं।

इसकी वर्तमान कार्यसमिति में विशिष्ट साहित्यिक एवं सेवाभावी कार्यकर्त्ता जुड़े हुए हैं। इनमें प्रमुख हैं सर्वश्री विमल लाठ, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, नेमचन्द कन्दोई, जुगलकिशोर जैथलिया, महावीर प्रसाद अग्रवाल, जयगोपाल गुप्ता, अशोक गुप्ता, अरुण मल्लावत एवं कुसुम लूंडिया एडवोकेट प्रस्तुति।◆

लघु कथा :

पक्षियों का चहकना

१३वीं शताब्दी में राजा नरसिह्मदेव ने कोणार्क मंदिर का निर्माण करवाया। निर्माणकार्य के पूर्ण होते-होते उसकी अद्‌भुत शिल्पकला की प्रशंसा चारों तरफ फैलने लगी। कुछ दरबारियों ने राजा को सलाह दी कि इस तरह का अद्‌भुत निर्माण कार्य अन्यत्र न हो सके, इसके लिए समस्त शिल्पकारों के हाथ कटवा दिए जाने चाहिए। परन्तु राजा का एक मंत्री इस बात से सहमत नहीं था। राजा ने जब उसकी राय जाननी चाही तो उसने बड़ी चतुराई से राजा के समक्ष अपनी बात रखते हुए कहा-अन्नदाता झुरमुट की ओट में चहकने वाले पक्षियों का चहकना सदा हर्षगान ही नहीं होता उनके स्वर में छिपे पीड़ा को समझने का प्रयास भी हमें करना चाहिए।

राजा ने तत्काल उपरोक्त निर्णय पर रोक लगा दी। राजा के एक निर्णय में जहाँ पीड़ा झलक रही थी वहीं कुशल मंत्री के चलते बदले निर्णय ने सारे वातावरण में खुशबू फैला दी, हर तरफ राजा नरसिह्मदेव की जय-जयकार गूँजने लगें। कोणार्क मंदिर के चारों तरफ सूर्य की किरणें चमकने लगी। कल भी ऐसा ही था, परन्तु आज उसके स्वर गूजने लगे। आज हमें लगने लगा कि मंदिर के प्रांगण में सूर्य देवता ने खुद अवतार ले लिया हो।◆

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय

1-सी, मदन मोहन बर्मन स्ट्रीट (1 तल्ला), कोलकाता-700007

संक्षिप्त परिचय :

अपनी साहित्यिक गतिविधियों, अनूठे साहित्यिक प्रकाशनों एवं राष्ट्रीय स्तर के दो पुरस्कारों (सम्मानों) के लिए देश भर में सुप्रसिद्ध श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय की स्थापना सन् १९१६ ई. में बालसभा के रुप में वरिष्ठ समाजसेवी एवं स्वतन्त्रता सेनानी श्री राधा–कृष्ण नेवटिया ने की एवं दो वर्ष पश्चात् इसका नाम बालसभा से बदलकर कुमारसभा कर दिया। तबसे यह संस्था निरन्तर गतिशील हैं।

१९२० के आसपास स्वदेशी आन्दोलन से अनुप्राणित होकर यह संस्था विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार, चरखा आन्दोलन एवं राष्ट्रीय शिक्षा की विभिन्न गतिविधियों तथा राष्ट्रीय जागरण के साहित्य प्रकाशन की केन्द्र बनी, साथ ही इसके कार्यकर्त्ता बालविवाह, मृतकभोज एवं विधवा विवाह निषेध की रुढ़ियों के विरुद्ध भी संघर्ष में आगे रहे। १९२८ ई. में ब्रिटिश पुलिस के अत्याचारों के विरुद्ध मिट्टी के मॉडलों का एक प्रदर्शनी लगाई जिसका उद्घाटन नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने किया।

१९७५ ई. में आपातकाल के विरुद्ध जनजागरण का शंखनाद करते हुए हल्दीघाटी चत:शती समारोह एवं वीर रस काल सन्ध्या के माध्यम से तानाशाही को ललकारा एवं उससे उत्पन्न कष्टों को कलकार बदलने तक सहा। १९८७ ई. में राष्ट्रीय स्तर पर सेवाभावी कार्यकर्त्ताओं का सम्मान करने हेतु स्वामी विवेकानन्द सेवा सम्मान एवं १९९० ई. में सांस्कृतिक मेधा सम्पन्न व्यक्तियों को सम्मानित करने हेतु डॉ. हेडगंवार प्रज्ञा सम्मान प्रारंभ किये जो लगातार प्रतिवर्ष दिये जाते हैं।

१९९४ ई. में अपने ७५ वर्ष पूरे होने पर कौस्तुभ जयन्ती वर्ष में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी के एकल काव्य पाठ ऐतिहासिक कार्यक्रम का आयोजन किया एवं उसी वर्ष स्वदेशी विषयक समारोह में पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर सहित देश के शीर्ष चिन्तकों ने अपने विचार रखे। इस क्रम में आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री के द्वारा ईशोपनिषद एवं भगवत् गीता पर मासिक प्रवचन का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ जो लागातार ६ वर्ष चला एवं प्रवचन पुस्तकाकार भी छपे एवं प्रशंसित हुए।

कुमारसभा ने महापुरुषों के जीवन एवं महत्व की राष्ट्रीय घटनाओं पर संग्रहणीय स्मृतिकायें एवं दर्जनों पुस्तकें भी प्रकाशित की। आज भी यह पुस्तकालय साहित्यिक गतिविधियों के केन्द्र के रुप में देश भर में विख्यात है।

इसमें २२ हजार से अधिक हिन्दी पुस्तकें है एवं सौ के लगभग पत्र पत्रिकाओं से इसका वाचनालय समृद्ध हैं। आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री इससे सदैव जुड़े रहे एवं मार्गदर्शक रहे।

वर्तमान में सर्वश्री जुगलकिशोर जैथलिया, विमल लाठ, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, महावीर बजाज, नन्दकुमार लढ़ा, अरुण प्रकाश मल्लावत, दाऊलाल कोठारी एवं दुर्गा व्यास प्रभूति कार्यकर्त्ता के रुप में सक्रिय हैं।◆

बालिका विद्या मन्दिर, झरिया

बालिका विद्या मंदिर झरिया के इतिहास में श्रीमती काशीबाई पढ़ियार का नाम चिरस्मरणीय रहेगा। इनके द्वारा प्रदत्त जमीन पर इस संस्था का भव्य भवन सर ऊँचा किये खड़ा है। छठे दशक के प्रारंभ में झरिया की श्रीमती काशीबाई ने अपने स्वर्गीय पति रतिलाल नानजी पढ़ियार की पुण्य स्मृति में नारी शिक्षा हेतु दस कट्ठा जमीन लोक शिक्षा समाज को प्रदान की। लोक शिक्षा समाज ने स्थानीय दानी–मानी सज्जनों के आर्थिक सहयोग से इस भूमि पर एक भव्य तिमंजिले भवन का निर्माण पूर्ण कराकर मारवाड़ी सम्मेलन, झरिया को सौंप दिया। मारवाड़ी सम्मेलन ने इस भवन में दिनांक १.१.१९६१ से बालिका विद्या मन्दिर का संचालन प्रारंभ किया। कालक्रम से विद्यालय की लोकप्रियता के साथ–साथ छात्राओं की संख्या बढ़ती गई, जिसके कारण उक्त विद्यालय भवन में सुचारू रूप से अध्यापन और पाठ्येत्तर कार्यक्रमों के संचालन में स्थानाभाव की समस्या खलने लगी।

दिनांक ७.२.२००२ को विद्यालय से सटी तीन कट्ठा जमीन श्रीमती तारा देवी पत्नी स्व० श्रवण अग्रवाल से खरीद कर विद्यालय के चाहरदिवारी के भीतर लिया गया। आज उक्त जमीन पर सुन्दर एवं आकर्षक बगीचा बना हुआ है। जिसके चारों ओर तरह–तरह के फूल, पौधे एवं गमले गलाए गये हैं। विगत कई वर्षों से प्रत्येक वर्ष १५ अगस्त एवं २६ जनवरी के समारोह के अवसर पर उक्त जमीन पर ही झण्डोत्तोंलन का कार्यक्रम संपादित कराया जाता है।

माहेश्वरी पुस्तकालय

माहेश्वरी भवन, 4, शोभाराम बैशाख स्ट्रीट, कोल–7

माहेश्वरी पुस्तकालय की स्थापना ८ अगस्त १९१४ ई. को २० बाँसतल्ला स्ट्रीट में हुई। बड़ाबाजार लाईब्रेरी (१९०० ई०) के बाद इस अंचल का यह दूसरा पुस्तकालय प्रारम्भ हुआ। सात वर्ष बाद इसे ४, शोभाराम बैशाख स्ट्रीट में माहेश्वरी सभा भवन में स्थानान्तरित किया गया, जो अभी तक उसी स्थान पर चल रहा है।

इसकी रजत जयन्ती १९४३ ई०, स्वर्ण जयन्ती १९६६ ई०, हीरक जयन्ती १९७५ ई० व अमृत महोत्सव १९९१ ई० में उत्साह पूर्वक मना चुके हैं। इसमें २२ हजार के लगभग पुस्तकों के अलावा बीसों पुरानी पत्रिकाएँ फाइलें भी शोधार्थियों हेतु उपलब्ध हैं।

वर्तमान में सोलह हिन्दी, अंग्रेजी अखबार व पच्चीस पत्रिका पढ़ने हेतु उपलब्ध हैं।

दाऊलाल कोठारी (सभापति), बलदेवदास बाहेती (उप–सभापति), अशोक कुमार सोनी (मंत्री), शिवकुमार बिन्नानी (उप–मंत्री), मदनमोहन कोठारी (कोषाध्यक्ष)।

कार्यकारिणी सदस्य : अरुण कुमार सोनी, आनन्द पचीसिया, संजय कुमार बिन्नानी, मनोज कुमार लाहोटी, मनोज कुमार झँवर, गोपालदास कोठारी।

सदस्य प्रतिनिधि : मनमोहन सोनी, नवरतन झँवर, गोपालदास लाखेटिया, किशन कुमार भंडारी, मदन मोहन कोठारी, लक्ष्मीनारायण सोनी, पदेन मंत्री, नरेन्द्र कुमार करनानी, सभा प्रतिनिधि।◆

सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय

186, चित्तरंजन एवंन्यू, कोलकाता–700007

सेठ सूरजमल जालान स्मृति भवन के अन्तर्गत सेठ सूरजमल जालान ट्रस्ट द्वारा संचालित सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय की स्थापना सेठ मोहनलाल जालान द्वारा सन् १९४१ ई० में की गयी थी। आज यह कोलकाता का ही नहीं अपितु पूर्वी भारत के हिन्दी एवं संस्कृत साहित्य के श्रेष्ठतम पुस्तकालयों में से एक है। पुस्तकालय में शोधकर्ताओं के लिए विशेष व्यवस्था है। वाचनालय में बाल–विभाग की भी सुव्यवस्था है, जिसमें सत्–साहित्य के द्वारा बालकों के आदर्श चरित्र निर्माण का प्रयास किया जाता है।

पुस्तकालय में संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी, अंग्रेजी तथा हस्तलिखित कुल ३१८७० पुस्तकें है। दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक एवं त्रैमासिक कुल ७५ पत्र–पत्रिकाएँ नियमित आती हैं। साधारण एवं आजीवन सदस्यों की कुल संख्या १२२२ हैं।

पुस्तकालय कार्यकारिणी समिति–श्री तुलाराम जालान–अध्यक्ष, श्री सागरमल गुप्त–मंत्री, श्री बजरंग प्रसाद जालान–सदस्य, श्री जुगलकिशोर जैथलिया–सदस्य, डॉ० प्रेमशंकर त्रिपाठी–सदस्य, श्री विश्वम्भर नेवर–सदस्य, श्री अरुण प्रकाश मल्लावत–सदस्य, श्री विधुशेखर शास्त्री–सदस्य, एवं श्रीमती दुर्गा व्यास–सदस्य।

लगभग ६० से अधिक वर्षों से पुस्तकालय के तत्वावधान में तुलसी जयंती समारोह प्रति वर्ष भव्य रुप से संपन्न होता रहा है। इस आयोजन को देश के लगभग सभी शीर्षस्थ विद्वानों ने संबोधित किया है।◆

श्रद्धांजलि :

राजकुमार गाड़ोदिया

श्रद्धा के दो शब्द

– प्रमोद्र सराफ, संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष

दिनांक ३१ मई २०१० को प्रात: ९ बजे फोन की घंटी बजी। सूचना मिली कि राजू अपना पार्थिव शरीर छोड़कर अनंत की ओर चला गया है। एकाएक विश्वास ही नहीं हुआ। अल्पसमय के लिये मैं एक पत्थर जैसा जड़ हो गया। यह समाचार अत्यंत दुखद और असहनीय था, जिसकी पीड़ा से अभी तक मुक्त नहीं हो पाया हूँ। राजू चला गया एवं बच गई उससे सम्बंधित मधुर स्मृतियां। वैसे मृत्युलोक से विदा होने के पश्चात् भी सहकर्मी एवं स्वजन, जिसका बारंबार स्मरण करें, मनीषियों के अनुसार, वह इन्सान अमर हो जाता है।

दिनांक ३ जून २०१० को मारवाड़ी युवा मंच, गुवाहाटी शाखा द्वारा तेरापंथ भवन के सभागार में आयोजित शोक सभा में मंच के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल जैना विभिन्न विषयों पर राजू के ज्ञान के बारे में जानकारी देते हुए अचानक भावावेश में फूट फूटकर रोने लगे। श्री प्रमोद जैन तो इतने मर्माहत थे कि माइक के समक्ष आने बावजूद भी एक शब्द तक नहीं बोल सके। ऐसा आत्मीय लगाव अकारण नहीं हो सकता। भाई राजकुमार गाड़ोदिया के नाम के पूर्व स्वर्गीय शब्द का प्रयोग असह्य वेदना से पीड़ित कर रहा था, सन् १९८८ से १९९१ के कार्यकाल में मंच का राष्ट्रीय कार्यालय गुवाहाटी में था, गाड़ोदियाजी की देख–रेख में ही उसका संचालन होता था। सन् १९९४ से १९९७ को कार्यकाल में उन्होंने राष्ट्रीय महामंत्री के रुप में अपनी सेवाएं मंच को प्रदान की। इसी समय उनकी बौद्धिक क्षमताएं प्रकाश में आई। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर मंच संवाद के नाम से मासिक मुखपत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया, जो मंच शाखाओं एवं प्रान्तीय नेतृत्व के लिए काफी उपयोगी सिद्ध हुआ। समय समय पर उन्होंने मंचिका एवं मंच साहित्य प्रकाशन प्रकल्पों से जुड़कर मंच को अपनी सेवाएं प्रदान की।

राजू सादगी एवं विनम्रता का धनी था। उसके चेहरे पर कभी चिन्ता एवं निराशा की झलक देखने को नहीं मिली। मैंने उसे कभी गुस्सा करते हुए नहीं देखा। न तो उसमें नाम की भूख थी और न ही यश की चाह। सदैव नैपथ्य में रहकर कार्यो का संपादन करता था। कर्तव्यों का पालन करते हुए सदैव द्वन्द से मुक्त रहता था। निष्पक्षता एवं तटस्थ मानसिकता के धरातल पर टिके रहकर उसका व्यवहार सदैव स्नेहिल एवं आत्मीय होता था। मैंने उसकी वाणी एवं कर्म में एकरुपता देखी। उसके भाव एवं व्यवहार में कभी भेद नहीं देखा।

मंच आरती की एक बाती बुझ गई। बौद्धिक समाज का एक अमूल्य रत्न गुम गया। मारवाड़ी समाज का एक सजग एवं सक्रिय प्रहरी असमय विदा हो गया। इन्हीं भावनाओं के साथ मैं राजू को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी विदेही आत्मा को चिरशांति प्रदान करे एवं उनके शोक संतप्त परिजनों को इस असीम संकट की घड़ी में साहस प्रदान करे। मंच साथी स्वाध्याय को दैनिक नियम बनाकर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।◆

श्री चोखानीजी को पुत्र शोक

समाजिक वरिष्ट कार्यकर्ता श्री मोहन लाल चोखानी के एकमात्र पुत्र हेमन्त कुमार का गत १ अप्रैल २०१० को नागपुर में ६५ वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। हेमन्त कुमार, अपने पीछे माता, पिता, पत्नी एवं पुत्र–पौत्रादि छोड़ गये हैं।

मारवाड़ी सम्मेलन, श्री चोखानीजी को इस शोक में अपनी सहानुभूति प्रकट करता है, एवं प्रभू से प्रार्थना करता है कि इस घड़ी में उन्हें धैर्य धारण की शक्ति प्रदान करें।◆

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance instructions. And there are Companies that also finace dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solution. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28, July 2010
RNI Regd. No. 2868/68

SR RUNGTA R GROUP

Insync with Nature...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Exporters & Sponge Iron Manufacturer

(A Pioneer House for Minerals)

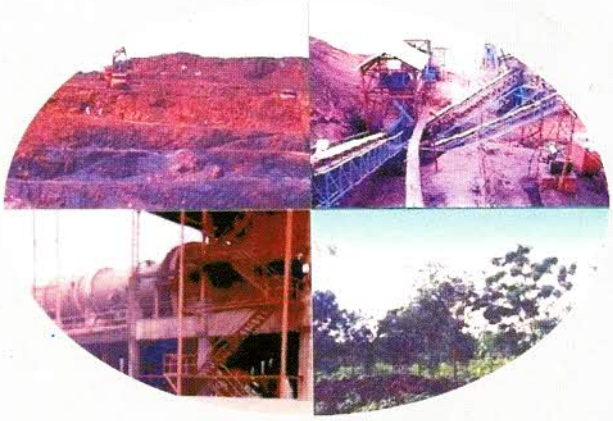

- ***IRON ORE*** *– BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *– BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *– LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA – 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 – 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

REGD. OFFICE:
8A, EXPRESS TOWER
42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA – 700 017, INDIA
Phone : 033 - 2281 6580, 22813751
Fax : 91-33- 2281 5380
E-mail : rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION:
MAIN ROAD,
BARBIL – 758 035
DIST. KEONJHAR
ORISSA, INDIA
Phone : (06767) 275221
Telefax : 91- 6767- 276161

SPONGE IRON DIVISION:
MAIN ROAD,
BARBIL – 758 035
DIST. KEONJHAR
ORISSA, INDIA
Phone : (06767) 276891
Telefax : 91- 6767- 276891

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com

T/WB/LM-867
SRI KAILASHPATI TODI (L.M.)
16, KISHANLAL BURMAN ROAD
BANDHAGHAT, BALKIA
HOWRAH- 711106
WEST BENGAL